परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

केन्द्रीय कार्यालय, वेस्टर्न सेक्टर, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094

TECHNOLOGIES FOR NEW INDIA@75
आज़ादी का अमृत महोत्सव

प.ऊ.शि.सं./अंकुर/2021/934 12 अक्टूबर, 2021

विषय: परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' का प्रेषण

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' (ई-पत्रिका) संयुक्तांक-12 व 13 का विमोचन अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के कर-कमलों से राजभाषा कार्यान्वयन सिमति बैठक में किया गया।

ई-पत्रिका परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की वेबसाइट-www.aees.gov.in के राजभाषा पेज पर लिंक: ANKUR-2021 पर क्लिक कर प्राप्त की जा सकती है।

जी.एस.आर.के.वी.शर्मा

(जी.एस.आर.के.वी. शर्मा)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं.

परमाणु ऊर्जा विभाग, मुंबई
प.ऊ.वि. की सभी यूनिटों/उपक्रमों/संस्थानों के प्रमुख
प.ऊ.वि. की सभी यूनिटों/उपक्रमों/संस्थानों के प्रशासनिक प्रमुख
प.ऊ.वि. की सभी यूनिटों/उपक्रमों/संस्थानों के राजभाषा प्रमुख
प.ऊ.शि.सं. के सभी विद्यालयों/अनुभागों के प्रमुख
उप प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं. (वेबसाइट पर अपलोड करने के अनुरोध सहित)
प.ऊ.शि.सं. के सभी विद्यालयों/केंद्रीय कार्यलय के अधिकारी/कर्मचारी

अंकुर

संयुक्तांक- 12 व 13
वर्ष–2021

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
अणुशक्तिनगर, मुंबई

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	आलेख	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		2
2	संरक्षक की कलम से ...		3
3	संरक्षक की कलम से ...		4
4	मार्गदर्शक की कलम से ...		5
5	मार्गदर्शक की कलम से ...		6
6	संपादकीय		7
7	'निर्भया' नहीं हूँ मैं	श्रीमती संगीता नायर	8
8	हाँ ! मैंने नूतन भावों से, नव बगिया महकाई	श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव	9
9	मैं शिक्षक हूँ सदी का!	श्री आजिनाथ गायकवाड़	10–11
10	वो किताब ही है मेरे दुःख–सुख की साथी!	श्रीमती टी.सी. प्रीति	12
11	हंदी भाषा को अपनायें सभी ऐसा माहौल बनाना है!	श्री रवींद्र गेहलोत	13
12	पिता एक उम्मीद है, एक आस है!	श्री सतीष एम. मेश्राम	14
13	इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है!	श्रीमती भारती एस. कुमार	15
14	परमाणु ऊर्जा उत्पादन लागत की दृष्टि से किफ़ायती, पर्यावरण हितैषी, सुरक्षित है तथा विपुलता में उपलब्ध होगी!	श्री सी. एल. शर्मा	16–17
15	निःसंदेह परमाणु ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति का एक विकल्प है!	श्री खीमाराम	18–19
16	परमाणु ऊर्जा एक उत्तम विकल्प है!	सुश्री पूजा कुमारी	20–21
17	डॉ .भाभा के प्रयासों के कारण आज भारत परमाणु ऊर्जा के मामले में विश्व के अग्रणी देशों में शुमार है!	श्रीमती अदिति डे	22–23
18	विकास के साथ–साथ संतुलित जीवन–शैली अत्यावश्यक है!	श्री रमेश तिलवे	24–25

क्र.सं.	आलेख	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
19	सुविधाएँ मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए ईज़ाद होती हैं, किंतु इनका अविवेकी प्रयोग जीवन के लिए अहितकर होता जा रहा है!	श्रीमती छाया माधव दिघे	26–27
20	त्योहारी उत्सव और मनाने के तरीके भी बदले हैं!	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	28–29
21	दृश्य–श्रव्य शिक्षण सामग्री के प्रयोग से पठन–पाठन में रोचकता उत्पन्न होती है!	श्री श्याम कुमार सोनी	30–31
22	बदलते परिवेश में विद्यार्थियों को नीति संबंधी ज्ञान देना नितांत आवश्यक है!	श्री योगेन्द्र कुमार	32–33
23	प्राणियों को ज्ञान से सिंचित करने का चिरंतन कार्य शिक्षा निःसंदेह कर रही है!	श्री अमोल विलासराव पाठक	34–35
24	आज का युवा मात्र सामाजिक रूप से ही नहीं, बल्कि वैचारिक रूप से भी स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सकता है!	श्री सतीष एम. मेश्राम	36–37
25	तेजी से बदलते परिदृश्य में ऑनलाइन शिक्षा का विकास निश्चित है!	सुश्री सरीफा पिनेरो	38–39
26	विद्यार्थी की सफलता, खिलाड़ी की जीत, कर्मचारी की उपलब्धियाँ– अनुशासन से ही साध्य हैं!	श्री पवन कुमार ठाकुर	40–41
27	उच्च अनुशासन अपनाकर हमें समाज में उदाहरण स्थापित करने चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी इनसे प्रेरित हो!	श्रीमती संध्या राकेश आंब्रे	42–43
28	अनुशासन अपनाए, जीवन सजाएँ!	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	44–45
29	स्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2019	श्री सुनिल ताथु माली	46
30	पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2019	श्रीमती रीतू सिंह किशन सिंह	47
31	पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2018	श्री संजय कुमार	48
32	पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2018	सुश्री सरीफा पिनेरो	49
33	हिंदी पखवाड़ा–2019		50–56
34	हिंदी पखवाड़ा–2018		57–65
35	हिंदी कार्यशालाएँ		66–86

संरक्षक

श्री सत्यब्रत सरकार
अध्यक्ष, रा.का.स. एवं
अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं.

श्री पी. लाहिरी
संयोजक, रा.का.स. एवं
सचिव, प.ऊ.शि.सं.

मार्गदर्शक

श्री कृष्ण शर्मा के.जे.वी.वी.
सदस्य, रा.का.स. एवं
प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं.

श्री जी.एस.आर.के.वी. शर्मा
सदस्य सचिव, रा.का.स. एवं
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं.

संपादन

श्री श्याम बाबू
सदस्य, रा.का.स. एवं
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प.ऊ.शि.सं.

श्री हरि शंकर त्रिपाठी
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक (एसएस)
प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई

नोटः ई–पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि प्रबंधन या संपादन मंडल की उनसे सहमति हो।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

1	अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई Chairman, AEES, Mumbai	अध्यक्ष Chairman
2	सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई Secretary, AEES, Mumbai	संयोजक Convener
3	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई Chief Administrative Officer, AEES, Mumbai	सदस्य सचिव Member Secretary
4	प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं., मुंबई/ Principal & Head, AU, AEES, Mumbai	सदस्य Member
5	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई Principal, AECS-1, Mumbai	सदस्य Member
6	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई Principal, AECS-2, Mumbai	सदस्य Member
7	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई Principal, AECS-3, Mumbai	सदस्य Member
8	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई Principal, AECS-4, Mumbai	सदस्य Member
9	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई Principal, AECS-5, Mumbai	सदस्य Member
10	प्रधानाचार्य, प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई Principal, AECS-6, Mumbai	सदस्य Member
11	प्रधानाचार्य, प.ऊ.क.म.वि., मुंबई/ Principal, AEJC, Mumbai	सदस्य Member
12	लेखा अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई AO, AEES, Mumbai	सदस्य Member
13	प्रमुख, स्थापना अनुभाग, प.ऊ.शि.सं., मुंबई Head, Establishment, AEES, Mumbai	सदस्य Member
14	प्रमुख, का. एवं गो. अनुभाग, प.ऊ.शि.सं., मुंबई Head, P & C, AEES, Mumbai	सदस्य Member
15	प्रमुख, क्रय अनुभाग, प.ऊ.शि.सं., मुंबई Head, Purchase, AEES, Mumbai	सदस्य Member
16	प्रमुख, वे. एवं पें. अनुभाग, प.ऊ.शि.सं., मुंबई Head, Sal. & Pen., AEES, Mumbai	सदस्य Member
17	प्रमुख, बिल एवं भ.नि. अनु., प.ऊ.शि.सं., मुंबई Head, Bills & P.F., AEES, Mumbai	सदस्य Member
18	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प.ऊ.शि.सं., मुंबई Junior Hindi Translator, AEES, Mumbai	सदस्य Member

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय)

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Government of India)

एस. सरकार
अध्यक्ष

S. Sarkar
Chairman

संरक्षक की कलम से ...

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गृह पत्रिका 'अंकुर' के 12वें अंक के प्रकाशन के माध्यम से आप सभी तक सीधे ही पहुँचने पर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसलिए, केंद्र सरकार के सभी संगठनों/संस्थानों में कार्यरत कर्मचारियों का संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग करें।

रॉबर्ट ए. हेनलिन ने कहा है– "Everything is theoretically impossible, until it is done"। राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों से आज हम कुछ दूर हो सकते हैं, लेकिन छोटे–बड़े प्रयासों जैसे– हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को तीव्र करना और बोलचाल की सरल हिंदी भाषा का सरकारी हिंदी में अधिकाधिक प्रयोग करना आदि से निर्धारित लक्ष्यों से आगे निकला जा सकता है। अतः जिस भी रूप में संभव हो, राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करें, आपका प्रत्येक ऐसा प्रयास किसी न किसी रूप में राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण होगा।

गृहपत्रिका राजभाषा के प्रति हमारे दायित्वों को तो पूरा करती ही है, साथ ही पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं, जानकारियों आदि के रूप में हम अपने सहकर्मियों की सृजनात्मक प्रतिभा से परिचित होते हैं। इस प्रकार गृहपत्रिका किसी भी संगठन में संवाद का एक सशक्त माध्यम सिद्ध होती है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ!

एस. सरकार

(एस. सरकार)
अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Government of India)

पी. लाहिरी
सचिव

P. Lahiri
Secretary

संरक्षक की कलम से ...

यह हर्ष का विषय है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' का 12वाँ प्रकाशित होने जा रहा है। कोरोना वैश्विक महामारी की परिस्थितियों के बीच यह अंक ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रहा है जो इसे और विशेष बनाता है। ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशन से यह पाठकों के लिए सर्व सुलभ और व्यापक तो होगी है, साथ ही यह भारत सरकार के ''डिजिटल इंडिया'' कार्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा करती है।

हिंदी पत्रिकाएं कार्यालयों में सरकारी काम–काज हिंदी में करने हेतु सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाती हैं तथा अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी एक मंच प्रदान करती हैं।

गृह पत्रिका अपने उद्देश्य के अनुरूप हिंदी कार्यान्वयन में सहयोगी की भूमिका में सफल हो, ऐसी शुभकामनाओं के साथ।

प. लाहिरी

(पी. लाहिरी)
सचिव,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय)

केंद्रीय कार्यालय, पश्चिमी क्षेत्र, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094

मार्गदर्शक की कलम से ...

भारत सरकार की नीति के अनुसार हमें प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना को अपनाकार हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है तभी हम राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे। सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए पूर्ण रूप से प्रयास करें। कार्यालय द्वारा भेजे जाने वाले अधिक से अधिक पत्र हिंदी में तैयार करें और राजभाषा नीति और आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था भारत सरकार की राजभाषा नीति और आदेशों के अनुपालन में राजभाषा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न हिंदी प्रशिक्षण और हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों को कार्यालयी कार्य मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रेरित करता है। इसी क्रम में गृह पत्रिका अंकुर का प्रकाशन विविध भाषा–भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी भाषा में लेखन रचनात्मकता अभिव्यक्ति का एक मंच प्रदान करने के साथ–साथ राजभाषा के प्रचार–प्रसार का एक सरल व प्रभावी माध्यम है।

ई–पत्रिका 'अंकुर' के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ!

जी.एस.आर.के.वी. शर्मा

(जी.एस.आर.के.वी. शर्मा)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं. एवं
सदस्य सचिव, रा. का. स., प.ऊ.शि.सं.

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय)

केंद्रीय कार्यालय, पश्चिमी क्षेत्र, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094

मार्गदर्शक की कलम से...

वस्तुतः शिक्षा ही किसी राष्ट्र के नव–निर्माण की आधारशिला होती है तो राष्ट्रभाषा भी किसी राष्ट्र की पहचान होती है। राष्ट्रनिर्माण के इसी पावन कर्म में सतत क्रियाशील हमारी परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था एवं तत्संबंधित 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' के सौजन्य से प्रकाशित ई–पत्रिका अंकुर प्रकाशन वास्तव में सराहनीय कहा जाएग। जहाँ 2020 का पूरा वर्ष अप्रत्याशित वैश्विक महामारी के चपेट में आकर प्रबंधनशून्य–सा हो गया, वहीं 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' ने विगत वर्षों की संचित रचनाराशि से इस पत्रिका को नवीन रूप में संपादित करने का साहसिक निर्णय लिया।

इस अंक में हमारी राष्ट्र भाषा के ऊर्जस्वी शिक्षक एवं गैरशिक्षक कर्मचारियों की पुरस्कृत रचनाओं यथा–हिन्दी कविता–लेखन, निबंध–लेखन, हिन्दी–पोस्टर एवं स्लोगन (नारा) आदि गतिविधियों को समाहित किया गया है। इसके साथ–साथ राजभाषा के विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील कार्यक्रमों जैसे– हिन्दी कार्यशाला विवरण, हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों आदि की संकलित छवि को प्रदर्शित किया गया है।

इस पत्रिका के संपादन में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जिन जनों का सहयोग रहा, उनका मैं हृदय से धन्यवाद हूँ।

(कृष्ण शर्मा के.जे.वी.वी)
प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शैक्षणिक इकाई,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

श्री श्याम बाबू,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

संपादकीय

पत्र–पत्रिकाएं हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाती हैं। इनके माध्यम से सभी के लिए हिंदी में अभिव्यक्ति का एक सहज और सुलभ मंच उपलब्ध होता है। परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के सभी कार्यालय राजभाषा अधिनियम के अनुपालन के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। एक सशक्त संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने सदैव लोगों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में एक सेतु का काम किया है। हिंदी राजभाषा के साथ–साथ वैश्विक भाषा के रूप में विश्व में छा जाने की पूर्ण क्षमता रखती है। बस, आवश्यकता है कि उदार, परिवर्तनशील और सर्वग्राही दृष्टिकोण को अपनाते हुए तब तक बढ़ते रहने की जब तक कि राजभाषा वैधानिकता सर्वमान्य लोकप्रियता में नहीं बदल जाती।

''अंकुर'' का प्रकाशन इन्हीं प्रयासों की एक कड़ी है जो निरंतर एवं निर्बाध गति से अधिकारियों और कर्मच. ारियों को हिंदी में मूल लेखन के लिए प्रवृत्त करती आ रही है। परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था राजभाषा अधिनियम, 1963 के सुचारू अनुपालन के लिए सतत प्रयत्नशील और प्रतिबद्ध है। संस्था सदैव राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अग्रणी रही है और गृह पत्रिका प्रकाशन के द्वारा हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह पत्रिका कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग, कार्यान्वयन और गतिविधियों की जानकारी तो देती ही है, इसके साथ–साथ कार्यरत कार्मिकों को लेखन के माध्यम से अपनी रचनात्मकता दिखाने का अवसर भी प्रदान करती है।

आशा है 'अंकुर' पत्रिका का प्रथम ई–पत्रिका रूप आपको पसंद आयेगा। पत्र–पत्रिकाओं में मुख–पृष्ठ, सामग्री, साज–सज्जा और रंग रूप आदि में सुधार की आवश्यकता सदैव रहती है। अतः सुविज्ञ और सुधी पाठकों से अपेक्षा रहेगी कि अपने बहुमूल्य विचारों और सुझावों से हमें अवगत अवश्य करायें। अंत में, पत्रिका के सभी रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके योगदान व सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हुआ। जय हिंद!

(श्याम बाबू)

'निर्भया' नहीं हूँ मैं

'निर्भया' नहीं हूँ मैं
क्योंकि मैं डरती हूँ
अंधेरे से, अनजान आदमियों से
इस देश की सूनी सड़कों से
मेरी तरफ बढ़ती गंदी नज़रों सें
मेरे शरीर के साथ मेरी रूह को भी
कुचलने वाले हैवानों से

मत बनाओं मुझे बेनाम
मेरी माँ ने दिया था मुझे प्यारा–सा एक नाम
मत बुलाओ मुझे भारत की बेटी
बेटियों का बलात्कार नहीं होता,
उन्हें जिंदा जलाया नहीं जाता
मत बनाओ मुझे अमर
मैं जीना चाहती हूँ, मरना नहीं।

नहीं चाहिए मुझे भगवान की अदालत में इंसाफ
चाहिए था गर्व और चैन से धरती पर जीने का अधिकार
नहीं चाहिए मेरे नाम से कैंडल लाइट मार्च
चाहिए था नारी की सुरक्षा के मुद्दे पर कठोर कानून
नहीं चाहिए मेरे माँ–बाप को दस लाख का चैक
चाहिए था मुझे इज्ज़त से काम करने का माहौल।

मत जाओ मेरे घर मीडिया को लेकर
ये पूछने मेरी माँ से कि इस हादसे पर हैं आपके क्या विचार?
क्योंकि नहीं हूँ मैं कोई हादसा
मत करो लाइव टेलीकास्ट मेरी हत्या की कहानियाँ
बार–बार
क्योंकि मेरे पिता भी आप
जैसे टीवी न्यूज के
शौकीन हैं
मत सुनाओ ब्रेकिंग
न्यूज में कैसे मेरा
हुआ था अपमान
उन राक्षसों के हाथ
क्योंकि हजार बार
दुहराके

श्रीमती संगीता नायर,
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, काकरापार

मीडिया भी करता है मेरी रूह का बलात्कार।
सुन सकते हैं तो सुनो
मेरी जलती हुई चिता से निकली चीखों को
मेरे पिता के रुंधे गले से निकलती सिसकियों को
देख सकते हैं तो देखो
मेरी माँ के सूखे आंसुओं को
मेरी बहन की जीवित लाश को
दे सकते हैं तो दो
मुझे मेरे हिस्से की जिंदगी
और मेरा मान–सम्मान

मत बुलाओ मुझे निर्भया क्योंकि मैं डरी हुई हूँ इस दुनिया से
मत बुलाओ मुझे अमर क्योंकि मैं और जीना चाहती हूँ
मत बुलाना मुझे भारत की बेटी
क्योंकि बेटियों को जिंदा जलाया नहीं जाता।

हाँ ! मैंने नूतन भावों से, नव बगिया महकाई

रोम – रोम फूलों का,
चूमा रोम – रोम फूलों का।
सुरभि हाथ रचाई,
हाँ ! मैंने नूतन भावों से,
नव बगिया महकाई।

सीमाओं के बंधन तोड़े
सोच समझ के धारे मोड़े
नवयुग में, नव डैने खोले।
अंतस पर नव संकल्पों की,
नगरी आज बसाई।

हाँ ! मैंने नूतन भावों से,
नव बगिया महकाई।

नाप रही हूँ
गगन का छोर।
जहाँ मिलेगी
स्वप्न की भोर
नव पतंग की
नवल है डोर।
कांटों में रहकर भी मैंने
चुभन नहीं अपनाई।

हाँ ! मैंने नूतन भावों से,
नव बगिया महकाई।

मुक्त मलय में
मुक्त बढ़ूंगी।
हर पल जग के
संग चलूँगी।
नई दिशा नव,
क्षितिज गढ़ूँगी।
देखो जीवन–गुलदस्ते में
चुन–चुन कली सजाई।

हाँ ! मैंने नूतन भावों से,
नव बगिया महकाई।

श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–3, मुंबई
प्रथम पुरस्कार

कविता लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (ख वर्ग) : 'सामाजिक एकता'

मैं शिक्षक हूँ सदी का!

मैं बुनियादी बेटा हूँ भारत माँ का,
नव पौधे बोने आया हूँ।
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

हिंदू – मुस्लिम – सिख – इसाई
सब एक पेड़ की डालियाँ,
इन डालियों से 'समृद्ध भारत' का
पेड़ बनने–बनाने आया हूँ।
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

श्री आजिनाथ गायकवाड़
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–2, तारापुर
प्रथम पुरस्कार

जब बाढ़ आए प्रलय आए,
इंसान ही इंसान के काम आए,
धर्म के नाम पर तू–तू मैं–मैं क्या?
यह कौन किसे समझाए?
'विविधिता में एकता' ही भारत की पहचान है,
यही अपने भारतवासियों को समझाने आया हूँ।
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

राष्ट्र पर जब आपत्ति आए, सब एक जुट हो जाएँ,
देशप्रेम का जब त्योहार आए, सब कंधे से कंधा मिलाएँ।
इंसानियत की जब भी बात आए,
जाति–धर्म में न किसी को बाँटा जाए।
रमजान में राम, दिवाली में रहमान,
सबका एक ही भगवान।
यह समस्त मानवजाति को बतलाने आया हूँ,
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।
किसान अनाज पैदा कर सबका पेट भराए,
फौजी सरहद पर रहकर हम सबको सुरक्षा देता,
राष्ट्रभक्ति के नाम पर पूरे भारत को गले लगाएँ।
वतन ही हमारा सब कुछ, उस पर सब कुर्बान।
यही सिखाने आया हूँ
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हर कोई बस इक–दूजे के लिए प्यार बनाए रखना।
एक–दूसरे के सुख–दुःख बांटने आया हूँ
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

मैं माली हूँ बगीचे का, एक फूल खिलाने आया हूँ,
जात–पात धर्म से इंसानियत का फर्ज़ बड़ा
यही बतलाने आया हूँ
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

एक ही जीवन सबके पास, आओ इक–दूजे को करें प्यार
हम खुश रहें, दूसरों को खुश रखें,

यही अरमान दिल में जगाने आया हूँ
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

हम सब भारतवासी मिल–जुलकर रहेंगे
हर घड़ी इक–दूजे के काम आएंगे।
'जीओ' और 'जीने दो' का संदेशा लाया हूँ
मैं शिक्षक हूँ सदी का,
'सामाजिक एकता' का संदेशा लाया हूँ।

"खुशी देने से खुशी मिलती है और दुःख देने से दुःख।"

कविता लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (ग वर्ग) : 'सच्ची मित्रता'

श्रीमती टी.सी. प्रीति
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, कुडनकुलम
प्रथम पुरस्कार

वो किताब ही है मेरे दुःख-सुख की साथी!

बहुत समय पहले की बात है,
पापा ने मुझे दी एक किताब।
कहा– बेटा कर लो तुम इससे दोस्ती।
अब रह गई मैं सोचती
किताब और दोस्ती ?
भला कैसी बनेगी यह मेरी दोस्त
जो न तो मेरे साथ खेलती है
और न ही मुझसे करती कोई बात।

यह सोच–सोच मैंने उसे उठाया,
पन्ने पलटे और कुछ की पढ़ाई,
दिन बीते और गुजरे साल,
जितने भी आते थे मन में सवाल
वह दोस्त देती थी जवाब
जो पापा ने दी थी किताब।

आज पूछे जो कौन है तुम्हार सच्चा मित्र,
तो मन में उभर आता चित्र किताब का,
बचपन में जिसके पन्नों से खेली थी
जिसे रंगा था, पढ़ा था
और फाड़ा भी था।
वो किताब ही है मेरे दुःख–सुख की साथी,
उसके बिना इस मुकाम पर न आ पाती,
शायद, अधूरी ही रह जाती।

"पुस्तक बिन जीवन कैसा,
बिन खिड़की हो घर जैसा"

हिंदी भाषा को अपनायें सभी ऐसा माहौल बनाना है!

हिंदी मेरी मातृभाषा है, जग में कितनी महान
इस धरती से उस अंबर तक है इसका सम्मान।
हिंदी में ही कार्य करूँ मैं ये मेरा स्वाभिमान
हिंदी से ही बनी है विश्व में भारत की पहचान।

हिंदी ने ही देश को बाँधा एकता के सूत्र में
हिंदी भाषा मिठास–सी घोले सबके अंतर्मन में।
बोलने वाले, सुनने वाले सब हैं इसके मद में
सहज–सरल भाव से बैठी ये सबके मन–मंदिर में।

हिंदी भाषा का है मन कितना निर्मल – पावन
प्यारी–प्यारी हिंदी भाषा है कितनी मन भावन।
सबके मन पर ऐसे छाए जैसे मद–मस्त सावन
हिंदी भाषा ऐसी भाषा कर दे सबका मन रोशन।

हिंदी को जो समझेगा पिछड़ेपन की निशानी
तो समझो खत्म होगी उसकी पूरी कहानी।
चैन न उसको आएगा, न होगा वो पूरा ज्ञानी
हिंदी का जो साथ छोड़ा शर्म से होगा पानी–पानी।

हिंदी को जो अपनाओगे तो देश खुशहाल बनाओगे
पूरे विश्व में नाम देश का रोशन तुम्हीं कराओगे।
पूछ रही है हिंदी भाषा कब सम्मान दिलाओगे
पूरे भारत में कब हिंदी की धारा बहाओगे।

करना है काम हमको ये बेचैन की है अर्ज
हर घर हिंदी भाषा का दीपक हमें जलाना है
हिंदी भाषा के स्नेह से सबको अवगत कराना है।
हिंदी भाषा को अपनायें सभी ऐसा माहौल बनाना है
हिंदी भाषा को विश्व में सर्वोच्च स्थान दिलाना है।

श्री रवींद्र गेहलोत
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–3, तारापुर
प्रथम पुरस्कार

श्री सतीश एम. मेश्राम
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, अणुपुरम
प्रथम पुरस्कार

पिता एक उम्मीद है, एक आस है!

पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म हैं।

पिता संघर्ष की आँधियों में हौसलों की दीवार है
परेशानियों से लड़ने को दो–धारी तलवार है,
बचपन में खुश करनेवाला खिलौना है
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।

पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी है
सब बच्चों को बराबर का हक देने वाला एक महारथी है,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।

पिता ज़मीर है पिता ज़ागीर है
जिसके पास पिता है वह सबसे अमीर है,
कहने को सब ऊपर वाला देता है ए–सतीश
पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।

इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है!

शरद ऋतु का सुहाना मौसम जब भी आता है
संग अपने त्योहारों का मौसम लाता है।
कई आशाएँ, सपनों को संग लाता है।
गली नुक्कड़ों पर जलते अलाव, वो ठंड, वो ठिठुरन
कुछ याद मुझे दिलाता है।
इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है।
फिर से दिल्ली की ठंड जीने को जी चाहता है
इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है।

सर्दी के आने पर बाज़ारों की रौनक
रंग बिरंगे कपड़े, धुंध की सफेद चादर
मानो कई सपनों को फैलाये हैं।
हरी–हरी घास पर ओस मोती की तरह दिखती है।
ये ठंड का मौसम कुछ याद मुझे दिलाता है
इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है।

सर्दी के मौसम की ऋतु, ये वादियाँ
आशाओं की किरणें चमकाती हैं
घर की याद हर बार मुझे आ जाती है।
सरहद पर रक्षा करते सैनिकों सी मैं हो गई
यादें साथ हैं, पर अपने नहीं।
फिर से उस ऋतु को जीने का जी चाहता है
इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है।

चाय की प्याली, माँ के हाथ का खाना, गर्म स्वेटर
ये सारे पल फिर से जीने का जी चाहता है।
इस सर्दी घर जाने को जी चाहता है।

श्रीमती भारती एस. कुमार
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–4, मुंबई
प्रथम पुरस्कार

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'परमाणु ऊर्जा'

परमाणु ऊर्जा उत्पादन लागत की दृष्टि से किफ़ायती, पर्यावरण हितैषी, सुरक्षित है तथा विपुलता में उपलब्ध होगी!

श्री सी. एल. शर्मा
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–3, मुंबई
संयुक्त प्रथम पुरस्कार

ऊर्जा जीवन है। संपूर्ण ब्रह्मांड का अस्तित्व ऊर्जामय है। धरती पर ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत सूर्य है। सूर्य ताप के बिना धरती पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मनुष्य तथा वनस्पतियाँ दोनों को अपने अस्तित्व के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। प्रारंभ में मनुष्य पेड़ों से प्राप्त लकड़ी को ऊर्जा के स्रोत के रूप में उपयोग करता था। उस समय जनसंख्या कम थी और ऊर्जा की आवश्यकता मुख्य तौर पर भोजन पकाने के लिए ही पड़ती थी किंतु समय के साथ मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ीं और उसी के अनुसार ऊर्जा की आवश्यकता भी। तब मनुष्य ने ऊर्जा के नए स्रोत खोजे। कोयला और पेट्रोलियम बहुत समय से मनुष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति करते आ रहे हैं। ये ऊर्जा के परंपरागत स्रोत हैं जिनकी उपलब्धता सीमित है और निश्चित रूप से एक समय आने पर ये समाप्त हो जाएँगे।

अतः मनुष्य ने ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की खोज शुरू की। ऐसे स्रोत जिनका दीर्घकाल तक उपयोग किया जा सके। ऐसे स्रोत हैं– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा। इनके अतिरिक्त समुद्र की लहरों तथा भूगर्भीय ताप को भी ऊर्जा के स्रोत के रूप में देखा जा रहा है किंतु इन सभी वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों में परमाणु ऊर्जा को सर्वाधिक वरीयता मिल रही है। संसार के विकसित देश

परमाणु ऊर्जा का उपयोग अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के अधिकांश भाग की पूर्ति करने में कर रहे हैं।
परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की सीमाएँ हैं और कुछ हानियाँ भी उनसे जुड़ी हुई हैं। इन्हें निम्न प्रकार समझा जा सकता है। जैसेः–

1) इनकी उपलब्धता सीमित है और उपयोग के साथ ये एक दिन पूरी तरह समाप्त हो जाएँगे।

2) इनसे ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया में भारी मात्रा में वायुमंडल को प्रदूषित करने वाली गैसें उत्सर्जित होती हैं जिससे मनुष्य का जीवन सुख–सुविधा संपन्न होने के साथ–साथ खतरे में भी पड़ता जा रहा है और प्रतिदिन लोग प्रदूषण का शिकार होकर मर रहे हैं।

3) इन स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करना आर्थिक तौर पर महँगा पड़ता है क्योंकि इनकी भारी मात्रा का प्रयोग होने के बावजूद तुलनात्मक रूप से कम ऊर्जा प्राप्त होती है।

दूसरी ओर ऊर्जा के गैर–परंपरागत स्रोत हैं– जलविद्युत, पवन–ऊर्जा, सौर–ऊर्जा एवं परमाणु ऊर्जा। इनमें भी परमाणु ऊर्जा को छोड़कर अन्य सबकी सीमाएँ हैं। जलविद्युत बनाने के लिए नदियों पर बड़े–बड़े बाँध बनाने पड़ते हैं। बाँध के पास ही बिजली घर बनाना पड़ता है जो कि अपेक्षाकृत खर्चीला है तथा बाँध किन्हीं कारणों से क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में जल प्रलय आने की आशंका हर समय बनी रहती है। पवन ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए भी बड़े भूभाग पर पवनचक्कियाँ लगानी पड़ती हैं जिन पर प्रारंभिक लागत बहुत आती है जबकि ऊर्जा का उत्पादन अपेक्षाकृत कम और छोटे पैमाने पर होता है। सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने के लिए भी इसी तरह अधिक खर्चा करना पड़ता है जबकि उत्पादन तुलनात्मक रूप से कम होता है।

लागत और उत्पादन की दृष्टि से देखा जाए तो परमाणु ऊर्जा वर्तमान में ऊर्जा की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला सबसे किफ़ायती एवं बेहतर विकल्प है। फ्रांस अपनी ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति का 70% से अधिक परमाणु ऊर्जा से पूरा करता है। दुनिया के अन्य विकसित देशों में भी परमाणु ऊर्जा को अन्य स्रोतों के मुकाबले वरीयता दी जाने लगी है। भारत भी निरंतर परमाणु ऊर्जा के मामले में प्रगति पथ पर है और वह दिन दूर नहीं जब हम हमारी ऊर्जा आवश्यकताओं की अधिकांश पूर्ति परमाणु ऊर्जा से करने वाले अग्रणी देश बन जाएँगे।

मनुष्य की ऊर्जा आवश्यकताएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रहीं हैं। आज कल की जीवन शैली तथा सुख सुविधा के साधनों ने ऊर्जा की आवश्यकता को भयावह तौर से बढ़ा दिया है। हम अब सभ्यता के उस चरण में पहुँच चुके हैं जहाँ से वापस पैर खींचना संभव नहीं है। हमें दिन–रात ऊर्जा की जरूरत है। ऊर्जा के बिना काम चलने वाला ही नहीं है। यह सर्व विदित है कि ऊर्जा की आवश्यकता कहाँ–कहाँ पड़ती है किंतु हर तरह की जरूरत के लिए ऊर्जा की आपूर्ति कहाँ से की जाएँ, कैसे की जाएँ– यही प्रश्न महत्त्वपूर्ण है जिसका समाधान परमाणु ऊर्जा में निहित है। यह भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति का सबसे किफायती, सुलभ एवं महत्त्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होने वाला है। पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि परंपरागत स्रोतों के विलुप्त होने की दशा में नवीकरण योग्य अथवा दीर्घकालिक स्रोत ही एकमात्र विकल्प होंगे। भविष्य में ऊर्जा की आवश्यकता वर्तमान की तुलना में कई गुना अधिक होगी जिसकी पूर्ति जलविद्युत के साथ–साथ परमाणु ऊर्जा से ही की जा सकती है।

परमाणु ऊर्जा उत्पादन लागत की दृष्टि से किफ़ायती, पर्यावरण हितैषी, सुरक्षित है तथा विपुलता में उपलब्ध होगी। इसके उत्पादन में अन्य स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करने के समान ही सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मानव जाति की प्रगति ऊर्जा की निर्बाध आपूर्ति से जुड़ी हुई है तो परमाणु ऊर्जा ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में सबसे अग्रणी भूमिका निभाने वाली है।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'परमाणु ऊर्जा'

श्री खीमाराम
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–2, तारापुर
संयुक्त प्रथम पुरस्कार

निःसंदेह परमाणु ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति का एक विकल्प है!

मानवीय सभ्यता के विकास के साथ ही ऊर्जा की आवश्यकता और महत्त्व से मानव भलीभाँति परिचित हो चुका था। मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक औद्योगिक विकास एवं ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विश्व प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है। परंतु बढ़ती जनसंख्या और ऊर्जा की खपत के बढ़ने से और घटते ऊर्जा के प्राकृतिक स्रोतों के परिणाम स्वरूप आज पूरी दुनिया वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर अपना ध्यान लगा रही है।

खनिज तेल एवं कोयला सीमित मात्रा में भू–गर्भ में उपलब्ध है। यह तथ्य विश्व के तमाम देशों के वैज्ञानिक भलीभाँति जानते हैं। अतः विकल्प एवं कम लागत के तौर पर परमाणु ऊर्जा विश्व की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में पूरी तरह से सक्षम है। आज पाश्चात्य देशों, इंग्लैंड, फ्रांस, यूरोप, जर्मनी के साथ–साथ चीन एवं जापान जैसे विकसित देशों की तरक्की और प्रगति का मुख्य कारण उनका परमाणु ऊर्जा पर सर्वाधिक जोर देना है। अतः भारत और उसके जैसे विकासशील देशों की प्रगति एवं विकास हेतु परमाणु ऊर्जा एक बेहतरीन विकल्प है। आज फ्रांस जैसे देश की 70% ऊर्जा की पूर्ति परमाणु संयंत्रों द्वारा होती है। दूसरा इसका एक अन्य कारण यह भी है कि इसके उत्पादन के दौरान कार्बन–डाई–ऑक्साइड गैस बहुत ही कम मात्रा में उत्सर्जित होती है। इस प्रकार से यह पूरी तरह से पर्यावरण हितैषी भी है।

परमाणु ऊर्जा का उत्पादन परमाणु संयंत्रों में उसके

विखंडन के द्वारा किया जाता है। इसमें यूरेनियम के नियंत्रित विखंडन से बिजली का उत्पादन किया जाता है। आज भारत जैसे विशाल देश एवं विशाल जनसंख्या की ऊर्जा आवश्यकताएँ बहुत बढ़ी हैं। अतः ऐसे में सीमित प्राकृतिक संसाधन कोयला आदि से इसकी पूर्ति संभव नहीं है। आज भी भारत के अनेकों गाँव और शहर रोशनी से वंचित हैं। अतः परमाणु संयंत्र अधिक से अधिक संख्या में स्थापित कर इस दिशा में और अधिक काम करने की आवश्यकता है।

भारत में परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने आजादी से पूर्व कहा था कि यदि आज हम परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान और कार्य आरंभ करते हैं तो भविष्य में इस कार्य हेतु हमें दूसरे देशों का मुँह नहीं ताकना पड़ेगा। हमें वैज्ञानिक और इंजीनियर यहीं पर तैयार मिलेंगे।

सन् 1948 में भारत में स्थापित प्रथम परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना के साथ ही इस दिशा में हमारे देश ने निरंतर प्रगति की है। भारत सदा ही शांति और अहिंसा का पक्षधर रहा है। सदियों से यहाँ के ऋषि–मुनि और वैज्ञानिक सदैव मानव–कल्याण को ध्यान में रखकर अपना कार्य करते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरी दुनिया में आणविक हथियारों के उत्पादन और विकास की एक होड़ मच गई जो अगले लंबे समय तक जारी रही। पूरी दुनिया जानती है कि भारत परमाणु ऊर्जा का उपयोग केवल अपने जन–कल्याण और राष्ट्र के विकास में ही करता है और आगे भी करता रहेगा। यही कारण है कि भारत एक मात्र देश है जिसे सभी परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र इस कार्य में भारत का समर्थन और सहयोग करते हैं।

परमाणु ऊर्जा का उपयोग जन–कल्याण एवं राष्ट्र के विकास हेतु अनेक प्रकार से किया जाता है। बिजली के उत्पादन के साथ–साथ खाद्य प्रसंस्करण, उन्नत बीजों का निर्माण, कृषि सुधार, चिकित्सीय उपकरण एवं रोगों के निदान में इसका उपयोग कर देश को प्रगति–पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। आज हमारे देश में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि राज्यों में परमाणु बिजली संयंत्र कार्यरत हैं। देश का पहला परमाणु बिजली घर महाराष्ट्र के तारापुर में 1969 में स्थापित किया गया था। भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तथा ग्लोबल वॉर्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से निजात के लिए परमाणु ऊर्जा एक बेहतरीन विकल्प है। प्राकृतिक ईंधनों जैसे कोयला व पेट्रोलियम आदि से बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करना असंभव है। परमाणु ऊर्जा लागत की दृष्टि से किफायती भी है और उत्पादन के अपशिष्ट उत्सर्जन से पर्यावरण को कोई हानि भी नहीं होती। आज राष्ट्र को विकसित देशों को श्रेणी में खड़ा करना है, नागरिकों को बेहतर जीवन शैली और उच्च स्तर प्रदान करना है तो परमाणु ऊर्जा अनुसंधानों को और अधिक गति देनी होगी।

फसलों के उत्पादन में वृद्धि, फलों और सब्जियों के लंबे समय तक भंडारण और फसलों का कीटों से बचाव परमाणु ऊर्जा के अन्य अनुप्रयोग हैं। भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। अतः हमारे देश में कृषि सुधारों के अत्यावश्यकता है। इसको ध्यान में रखते हुए भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक निरंतर अनुसंधानरत हैं और देशों को किसानों को नए–नए जल संयंत्र, उन्नत बीज, जैविक खाद निरंतर मुहैया करा रहे हैं। इसके अलावा गंभीर बीमारियों के उपचार भी परमाणु विकिरण तकनीक द्वारा किया जा रहा है।

अपार उपयोगिता के बावजूद परमाणु ऊर्जा के संबंध में कुछ भ्रांतियाँ भी जुड़ी हैं। आवश्यकता है कि परमाणु ऊर्जा के विषय में भारतीय जनमानस को और अधिक जागरुक किया जाए। निःसंदेश परमाणु ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति का एक विकल्प है। अतः हमारी जिम्मेदारी है कि परमाणु कार्यक्रमों के विकास और इसमें निवेश का सकारात्मक माहौल तैयार करें।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'परमाणु ऊर्जा'

सुश्री पूजा कुमारी
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, अणुपुरम
प्रथम पुरस्कार

परमाणु ऊर्जा एक उत्तम विकल्प है!

किसी भी देश की उन्नति उसकी ऊर्जा उत्पादन क्षमता पर निर्भर करती है। भारत और दुनिया के अन्य देशों में ऊर्जा उत्पादन के लिए परंपरागत रूप से कोयला, लकड़ी, पेट्रोलियम आदि का उपयोग किया जाता है। किंतु प्रकृति में इनकी उपलब्धता सीमित है और आने वाले समय में ये पृथ्वी पर समाप्त हो जायेंगे। अतः परमाणु ऊर्जा समय की आवश्यकता है।

परमाणु ऊर्जाः

परमाणु ऊर्जा वह ऊर्जा है जो परमाणु नाभिक के संलयन और किसी बड़े परमाणु के विखंडन से उत्पन्न होती है। परमाणु ऊर्जा के उत्पादन में भारत विश्व में एक मत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में परमाणु ऊर्जा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध केंद्र हैं–

1) तारापुर, महाराष्ट्र
2) काकरापार, गुजरात
3) रावतभाटा, राजस्थान
4) नरौरा, उत्तर प्रदेश
5) कलपक्कम, तमिलनाडु
6) कुडनकुलम, तमिलनाडु
7) कैगा, कर्नाटक

कैगा परमाणु ऊर्जा केंद्र ने 940 दिनों से भी ज्यादा समय तक प्रचालन का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके अलावा भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा कुछ और परमाणु ऊर्जा केंद्रों की घोषणा की गई है।

परमाणु ऊर्जा की आवश्यकता क्यों ?

वर्तमान समय में ऊर्जा प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता है। यह ऊर्जा आवश्यकता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है

जो परंपरागत ईंधनों से पूरी होना संभव नहीं है। साथ ही परंपरागत ऊर्जा स्रोतों से हानिकारक गैसें उत्सर्जित होती हैं जो प्रदूषण की समस्या से पहले से जूझ रहे विश्व की समस्या को और गंभीर बना रही हैं। अतः वर्तमान में इन समस्याओं के समाधान के विकल्प के रूप में परमाणु ऊर्जा एक उत्तम विकल्प है।

परमाणु ऊर्जा के लाभः–

1) ऊर्जा का एक स्वच्छ विकल्प है।
2) कृषि पैदावार को रसायन मुक्त करने में सहायक।
3) ग्लोबल वॉर्मिंग समस्या का समाधान
4) प्रचुर ऊर्जा उत्पादन
5) परमाणु ऊर्जा के लिए आवश्यक ईंधन की दीर्घकालिकता
6) परमाणु विकिरणों का कई गंभीर बीमारियों के उपचार में प्रयोग
7) हानि रहित अपशिष्ट उर्त्सजन

परमाणु ऊर्जा के नुकसानः–

कुछ देश शांतिपूर्ण उद्देश्य से हटकर परमाणु ऊर्जा का प्रयोग युद्ध उन्माद फैलाने में कर रहे हैं जो विश्व के लिए खतरनाक है।

निष्कर्षः–

यदि हम परमाणु ऊर्जा का सदुपयोग करते हैं तो यह विश्व के लिए एक वरदान सिद्ध होगा।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (शिक्षक ग वर्ग) : 'परमाणु ऊर्जा'

डॉ. भाभा के प्रयासों के कारण आज भारत परमाणु ऊर्जा के मामले में विश्व के अग्रणी देशों में शुमार है!

श्रीमती अदिति डे
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–2, मुंबई
प्रथम पुरस्कार

पृथ्वी पर प्रत्येक जीव को ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ऊर्जा का परम स्रोत सूर्य है जिससे यह संसार प्रकाशित है।

जीवन चक्र के अलावा जीवन शैली के लिए भी मनुष्य को ऊर्जा की आवश्यकता होती है। भोजन, सुरक्षा से बढ़कर ऊर्जा की जरूरत यातायात, सुख–सुविधाओं तक पहुँच गई है। यही कारण है कि कोयला से प्राप्त होने वाली ऊर्जा हमारी जरूरतों के लिए नाकाफ़ी पड़ रही है।

भारत में परमाणु ऊर्जा का आगाज़ द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व ही डॉ. होमी जहाँगीर भाभा द्वारा किया गया। डॉ. भाभा के प्रयासों के कारण आज भारत परमाणु ऊर्जा के मामले में विश्व के अग्रणी देशों में शुमार है। डॉ. होमी जहाँगीर भाभा को भारत के परमाणु कार्यक्रम का जनक माना जाता है। उनके द्वारा संचालित कार्यक्रम को अनेक वैज्ञानिक व इंजीनियर आगे बढ़ा रहे हैं।

भारत में कलपक्कम, रावतभाटा, तारापुर आदि स्थानों पर नाभिकीय रिएक्टर स्थापित हैं। भारत ने शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए अपना प्रथम परमाणु परीक्षण वर्ष 1974 में किया।

आज परमाणु ऊर्जा के विषय पर ही हम क्यों बात कर रहे हैं जबकि ऊर्जा के अन्य स्रोत भी उपलब्ध हैं? आइऐ जानते हैं–

1) भारत में उपलब्ध कोयले को जलाने पर हानिकारक गैसें उत्सर्जित होती हैं जो सेहत और वातावरण के लिए

खतरनाक हैं।
2) कोयले के भंडार सीमित हैं।
3) सौर ऊर्जा एक विकल्प है किंतु यह इस्तेमाल में महँगा और पर्याप्त उत्पादक नहीं है।
4) पेट्रोलियम भंडार सीमित हैं।
अतः परमाणु ऊर्जा वर्तमान में एक बेहतर विकल्प बचता है।

परमाणु ऊर्जा नाभिकीय विखंडन से उत्पन्न होती है जिसमें एक भारी नाभिक दो भागों में टूट जाता है। यह एक श्रंखला अभिक्रिया है जो दो प्रकार की होती है– नियंत्रित व अनियंत्रित

नियंत्रित अभिक्रिया

नियंत्रित वातावरण में नाभिकीय रिएक्टरों में होती है और उससे प्राप्त ऊर्जा का मानव कल्याण के लिए उपयोग किया जाता है।

अनियंत्रित अभिक्रिया

यह अनियंत्रित वातावरण में होती है और इससे प्राप्त ऊर्जा का उपयोग विनाशकारी कार्यों के लिए किया जाता है।

परमाणु ऊर्जा के फायदेः–

1) कम नाभिकीय ईंधन से ज्यादा ऊर्जा
2) रिएक्टर से प्लूटोनियम प्राप्त होता है जो यूरेनियम से ज्यादा रेडियोधर्मी है।
3) रिएक्टर से प्राप्त कई कृत्रिम आइसोटोप्स का चिकित्सा के क्षेत्र में इस्तेमाल होता है।
4) कार्बन–14 का पुरानी वस्तुओं की आयु पता करने में उपयोग होता है।

परमाणु ऊर्जा के नुकसानः–

परमाणु ऊर्जा का अनियंत्रित उपयोग मानव जाति के लिए विनाशकारी हो सकता है।

परमाणु ऊर्जा भविष्य की ऊर्जा है। महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने स्वयं कहा है–

"भारत का भविष्य परमाणु ऊर्जा में है।"

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (गैर–शिक्षक क वर्ग): 'मानव जीवन शैली'

श्री रमेश तिलवे
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–2, रावतभाटा
प्रथम पुरस्कार

विकास के साथ-साथ संतुलित जीवन-शैली अत्यावश्यक है!

मानव जीवन ईश्वर की सबसे सुंदर कृति है और आनंद की प्राप्ति कर सकता है। परंतु यह आपके रहन–सहन और प्रकृति की व्यवस्था के साथ आपके अनुकूल पर निर्भर करता है।

प्राचीन काल में मानव जंगलों में जानवरों के साथ निवास करता था। नदियों, पानी की धाराओं के किनारे, गुफाएँ मुख्य निवास स्थल होते थे। भोजन के रूप में जंगली जानवर व वनस्पतियाँ खाते थे और पहनने के लिए जानवरों की खाल या वृक्षों की पत्तियों का उपयोग करते थे। समय बदला, मनुष्य की आवश्यकताएँ भी बदलीं और आवश्यकताओं ने आविष्कारों को जन्म दिया।

समय के साथ अग्नि का आविष्कार हुआ तो मनुष्य भोजन को पकाकर खाने लगा। एक मुखिया द्वारा नियंत्रित परिवारिक व्यवस्था बनी और मनुष्य ने अपनी विकास यात्रा प्रारंभ की। यातायात के साधनों के अभाव में भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर लौटने की बजाए वहीं बस जाते थे। पहिये का आविष्कार हुआ और यातायात के साधन आये। खेती करने लगे तो भोजन के भंडार बढ़े।

शिक्षा का विकास हुआ तो गुरूकुलों की व्यवस्था बनी। गुरूकुलों में गुरू–शिष्य परंपरा का जन्म हुआ। संबंधों में आत्मीयता थी।

समय चक्र के साथ विभिन्न आविष्कार हुए और मानव जाति ने अनेक साधन जुटाए। जंगलों को छोड़कर मकान बनाकर रहने लगा। परिवार टूटे और एकाकी जीवन यापन करने लगा।

जैसे–जैसे मनुष्य आविष्कार करता गया, तरक्की के नए आयाम जोड़ता गया। बिजली की खोज के साथ तो विकास को जैसे पंख लग गए। शरीर ढ़कने के लिए कपड़े आ गए और धोने के लिए मशीनें। जितनी सुविधाएँ बढ़ी, शरीर उतने ही आरामपरस्त होने लगे।

फिर आया कंप्यूटर जिसने पूरी दुनिया में क्रांति ली दी। कंप्यूटर के माध्यम से काम करने और शिक्षा के तरीके बदले। नई–नई प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से मनुष्य आर्थिक रूप से तो मजबूत होता जा रहा है लेकिन मानसिक रूप से कमजोर। यदि मनुष्य अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग नहीं होगा तो तेजी से हो रहा विकास सार्थक कैसे होगा।

एक समय था जब लोग जल्दी सोते थे और सुबह जल्दी उठते थे। वर्तमान दिनचर्या में इसका उलट होता है और लोगों को स्वीकार भी है। यह भी सच है कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर के लिए उचित नींद भी आवश्यक है।

पहले की जीवन–शैली में योग–प्राणायाम का विशेष स्थान होता था। मनुष्य ऋतुओं के साथ अपनी जीवन–शैली में परिवर्तन करते थे। आज की भागम–भाग जिंदगी में इनके परवाह पीछे रह गई है।

विकास के साथ–साथ संतुलित जीवन–शैली अत्यावश्यक है ताकि आधुनिक विकास मानव जीवन के लिए सार्थक हो।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (गैर–शिक्षक ख वर्ग): 'मानव जीवन शैली'

सुविधाएँ मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए ईज़ाद होती हैं, किंतु इनका अविवेकी प्रयोग जीवन के लिए अहितकर होता जा रहा है!

श्रीमती छाया माधव दिघे
केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.शि.सं.
प्रथम पुरस्कार

मानव सदियों से पृथ्वी पर राज करता है। यह कल भी खुद के लिए जीता था, आज भी खुद के लिए जीता है। मेरे विचार से जीवन–शैली के आधार पर मानव जीवन के तीन प्रकार निश्चित किए जा सकते हैं–

1) आदि मानव
2) मध्यकालीन मानव
3) आधुनिक मानव

1) **आदि मानवः**
आदि मानव अन्य जानवरों जैसा ही था जो अपने भोजन के लिए शिकार करता था और कच्चा ही खा जाता था। शरीर ढ़कने के लिए वह जानवरों की चमड़ी और पेड़ों की पत्तियों का इस्तेमाल करता था। निवास के लिए गुफाओं या पेड़ों पर रहता था। धीरे–धीरे पहिये और अग्नि का आविष्कार हुआ।

2) **मध्यकालीन मानवः**
मध्यकालीन मानव अपने विकास के बारे में सोचने लगा। खेती करने लगा और जीवन को सुधारने में जुट गया। शिक्षा का अपने दैनिक कामकाज में प्रयोग करने लगा। गुफाओं को छोड़ मकान निर्माण करने लगा और

सामाजिक व्यवस्थाएँ विकसित होने लगीं।

3) आधुनिक मानव:

वर्तमान युग आधुनिक मानव का युग है। आज का मानव अपनी तरक्की के लिए कुछ भी कर गुजरने को आमादा है। अपना जीवन सुखमय बनाने के लिए प्रकृति के संसाधनों का अंधाधुंध उपभोग कर रहा है। अपने विकास के लिए वह वसुधा को भूल गया है। फलस्वरूप, पर्यावरण दूषित हो रहा है, संसाधन घट रहे हैं।

जीवन को और आरामयुक्त करने के लिए सुख–सुविधाएँ और साधन जुड़ रहे हैं। गाड़ी, बंगला, कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल आदि मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। जितनी सुविधाएँ मिल रही हैं, मनुष्य उतना ही तेज दौड़ रहा है। फिर भी अपने स्वास्थ्य के लिए उसके पास समय की कमी है। सुविधाओं से जीवन जितना सुखमय हो रहा है, बीमारियों से जीवन उतना ही दुःखमय बन रहा है।

सुविधाएँ मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए ईज़ाद होती हैं किंतु इनका अविवेकी प्रयोग जीवन के लिए अहितकर होता जा रहा है। स्वयं के लिए सोचने के लिए लोगों को समय का अभाव है। उन्नति ही उन्नति हो रही है, लेकिन पर्यावरण का ख्याल किसी को नही। यह नई पीढ़ी के लिए हितकर नहीं है।

आज आवश्यकता है कि संपूर्ण जनमानस अपने स्तर से न केवल सोचे बल्कि पृथ्वी के संरक्षण में अपना योगदान भी करें। पर्यावरण बचाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ और स्वच्छता रखें।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (गैर–शिक्षक ग वर्ग): 'मानव जीवन शैली'

श्रीमती शोभना डी. पनीकर
केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.शि.सं.
प्रथम पुरस्कार

त्योहारी उत्सव और मनाने के तरीके भी बदले हैं!

भारत कृषि और किसान प्रधान देश है। गाँव और यहाँ का शांत वातावरण, हरियाली, पेड़–पौधे, खेत–खलिहान की शोभा अपनी ओर आकर्षित करते हैं। गाँवों का सरल रहन–सहन और सादगी जीवन को आरोग्य बनाते हैं। आधुनिकता की ओर बढ़ने के साथ जीवन–शैली भी बदली है। विज्ञान की नित नई–नई खोजें हो रही हैं। आज दीपकों की जगह बिजली के बल्बों ने ले ली है। गर्मी–सर्दी पर इंसान का नियंत्रण हावी है। आधुनिक यातायात के साधनों ने लंबी–लंबी दूरियाँ बहुत छोटी कर दीं हैं। मीडिया और मोबाइल आदि ने असंभव सी लगने वाली चीजों को भी संभव कर दिया है।

एक ज़माना था जब मैदानी खेल, पेड़ों पर मस्ती, गिल्ली–डंडा, कुश्ती आदि बच्चों व युवाओं के मुख्य मनोरंजन हुआ करते थे, आज इनकी जगह टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट आदि ने ले ली है।

पहले रात्रि में जल्दी सो जाना और सुबह ब्रह्म मुहूर्त में जागना आदर्श जीवन की श्रेणी में आते थे, लेकिन आज देर रात तक जागना और सुबह देरी से उठना सामान्य है। शिक्षा और कैरियर के प्रति जागरुकता से लोगों का जीवन के प्रति नज़रिया भी बदला है। जीवन की भागम–भाग में पिज्जा, वर्गर, गोल्ड ड्रिंक्स आदि फास्ट फूड लोगों की पसंद बन गए हैं। खान–पान में परिवर्तन से मोटापा, मधुमेह आदि अनेक बीमारियाँ कम उम्र में ही लोगों को होने लगी हैं।

विज्ञान और विकास से मानव जीवन बेहतर हुआ है तो इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। बेरोजगारी बढ़ी है और लोग आत्म–केंद्रित हुए हैं। ऊँची–ऊँची इमारतों के

लिए जंगलों को काटा जा रहा है जिससे पर्यावरण असंतुलन की समस्या बढ़ी है। लोग अपने निजी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इतने व्यस्त हैं कि परिवार व स्वयं के लिए समय नहीं है। माता–पिता अपनी संतानों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेज रहें जो अपने बेहतर कैरियर और भविष्य के लिए वहीं बस जा रहे हैं। फलतः माता–पिता अपनी वृद्धावस्था में अकेले रह जाते हैं।

महिला सशक्तीकरण के साथ आज की नारी हर क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित कर चुकी है। आज नारी को दोहरी भूमिका निभानी होती है। कैरियर के साथ परिवार के प्रति अपने दायित्वों को अच्छी तरह से पूरा करती है। लेकिन इस भागम–भाग में नारी को शारीरिक और मानसिक तनाव से भी गुजरना पड़ता है।

समय के साथ त्योहारी उत्सव और मनाने के तरीके भी बदले हैं। घर में पकवान बनाने की परंपरा कम होती जा रही है। बाजार में सब कुछ तैयार व उपलब्ध मिलता है। केरल के 'ओणम' में खूब पकवान बनाये जाते थे, आज लोग घंटो दुकानों पर लाइन में खड़े होकर भी इन्हें खरीदना पसंद करते हैं। लोग बदले, त्योहारी चमक भी बदली है।

आधुनिक जीवन–शैली ने हमें चाँद–सितारों पर तो पहुँचा दिया है, लेकिन मानवीय रिश्तों को कमजोर किया है।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'शिक्षा का बदलता स्वरूप'

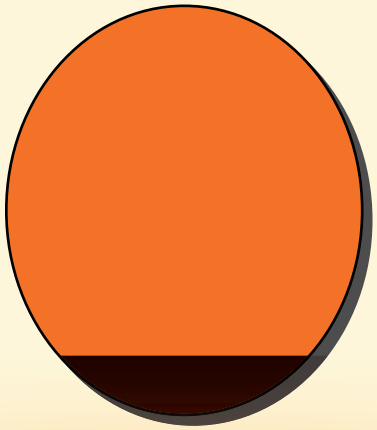

श्री श्याम कुमार सोनी
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–4, रावतभाटा
संयुक्त प्रथम पुरस्कार

दृश्य-श्रव्य शिक्षण सामग्री के प्रयोग से पठन-पाठन में रोचकता उत्पन्न होती है!

शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। महात्मा गांधी के अनुसार व्यक्ति के अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना, व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाना शिक्षा है।

शिक्षा का प्रारंभ माँ की गोद से ही हो जाता है। माँ ही जीव की निर्मात्री है।

भारत में प्रचीन शिक्षा

प्राचीन काल में उपनयन संस्कार के साथ ही शिक्षा आरंभ हो जाती थी। गुरूकुल में बच्चों को अध्ययन–अध्यापन के साथ कार्यकुशलता का पाठ भी पढ़ाया जाता था। गुरूकुल परंपरा के अनुसार बच्चों को योग्यता की कसौटी पर परखने के बाद उनका वर्गीकरण किया जाता था। बालिकाओं के लिए भी गुरूकुल में व्यवस्था थी जिसके अंतर्गत उन्हें चित्रकारी, संगीत, ललित कला आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था।

मध्यकालीन शिक्षा

मध्य युग में शिक्षा व्यवस्था युद्धों से प्रभावित रही। इस युग में मुख्यतः भाषा, व्याकरण और गणित आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। समाज की वर्ग व्यवस्था ने शिक्षा को प्रभावित किया। नारी शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था। शिक्षा का स्वरूप विषय केंद्रित था।

आधुनिक शिक्षा

वर्ष 1986 में नई शिक्षा नीति आने के साथ शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन हुए। विषय केंद्रित शिक्षा विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा में बदल गई। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन पर ध्यान दिया जाने लगा। विद्यार्थी

की आवश्यकता, रुचि और योग्यता के आधार पर उनका सर्वांगीण विकास करना शिक्षा का आधार बन गया। शिक्षा में तकनीक का प्रयोग शुरू हुआ और कंप्यूटर शिक्षा प्रारंभ हुई। समाज के वंचित और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए विशेष व्यवस्था के अंतर्गत ''नवोदय विद्यालय'' की परिकल्पना कार्यान्वित की गई। शिक्षा में नए–नए प्रयोग किए गए। लघु पाठ योजना के द्वारा छोटी–छोटी विषय–सामग्री से विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

संचार क्रांति का शिक्षा पर प्रभाव

संचार क्रांति के साथ शिक्षा का जैसे कायापलट ही हो गया। सामान्य कक्षाओं की जगह स्मार्ट कक्षाएँ लेने लगीं। दृश्य–श्रव्य शिक्षण सामग्री के प्रयोग से पठन–पाठन में रोचकता उत्पन्न होती है। इंटरनेट के आगमन ने तो जैसे पंख ही लगा दिए। माउस के एक क्लिक पर ज्ञान का भंडार हमारे समक्ष उपलब्ध हो जाता है। विषयों की सामग्री इंटरनेट की सहायता से पलक झपकते प्राप्त की जा सकती है। तकनीक का प्रयोग यदि विवेकपूर्ण तरीके से किया जाए तो संचार क्रांति शिक्षा के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकती है।

तकनीक आधारित शिक्षा का सुनियोजित प्रयोग किया जाए तो वर्तमान स्वरूप विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए हितकर रहेगा।

श्री योगेन्द्र कुमार
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–4, मुंबई
संयुक्त प्रथम पुरस्कार

बदलते परिवेश में विद्यार्थियों को नीति संबंधी ज्ञान देना नितांत आवश्यक है!

शिक्षा

संस्कृत व्याकरण में 'शिक्ष्' उपादाने धातु में टाप् प्रत्यय होने से शिक्षा शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है ''बालकानाम् अन्तर्निहित–शक्तीनां बहिरायनम'' अर्थात बालक के अंदर अंतर्निहित शक्तियों का बाह्य प्रदर्शन करना, शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

शिक्षा के प्रकार

वस्तुतः शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाषा के चार विकल्पों को यथावत् जानना ही शिक्षा को सीखना है।

श्रवण		
लेखन	**भाषा**	पठन
भाषण		

यदि इन चारों बिंदुओं को यथायोग्य जाना जाए तो ही शिक्षा का वस्तुतः अध्यापन किया जा सकता है।

अब प्रश्न उठता है कि शिक्षा का स्वरूप प्राचीन भारत में क्या रहा? इसके उत्तर में उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाण कहते हैं कि भारतवर्ष में शिक्षा अर्थात ज्ञान का आदान–प्रदान मौखिक रूप से श्रुति परंपरा से गुरूकुलीय पद्धति में होता रहा है। आचार्यगण यथाक्रम अपने शिष्यों को वेद–उपनिषद–शास्त्र–आरण्यक–ब्राह्मण ग्रन्थादि का अध्यापन करते थे और उनके उपरांत उनके शिष्य इस परंपरा का निर्वहन किया करते थे।

शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन

परिवर्तनि संसारे किं किं न परिवर्तयते– अर्थात परिवर्तन

इस सृष्टि चक्र का एक विशेष नियमांग है। बदलते समय के अनुसार आज की शिक्षा पद्धति में भी काफी बदलाव देखे जा रहे हैं। आज शिक्षा मौखिक रूप से आदान–प्रदान नहीं की जा रही है, बल्कि बदलते परिवेश में यहाँ भी अनेक बदलाव आ रहे हैं। जैसे आज शिक्षकों के हाथ में वही श्यामपट्ट या चॉक आदि नहीं है, अपितु आज के शिक्षक भी आधुनिकता का ध्यान रखते हुए होशियार कक्षा (स्मार्ट क्लास) को जानकर तथावत् बच्चों को आधुनिकतम तरीके अध्यापन कर रहे हैं।

यहाँ केवल शिक्षक ही नहीं अपितु विद्यार्थीगण भी आधुनिक इलैक्ट्रोनिक मीडिया की सहायता से अपना ज्ञान अद्यतन कर रहे हैं और किताबी ज्ञान मात्र तक सीमित नहीं हैं। पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ देश–विदेश, विज्ञान आदि समस्त क्षेत्रों में अपने ज्ञान का प्रसार करते नजर आ रहे हैं। आज बच्चों के हाथ में नोटबुक पेन के साथ–साथ स्मार्ट डिवाइस भी हैं जिनकी सहायता से वे हर वक्त अपने प्रश्नों के समाधान खोज सकते हैं।

शिक्षक भी तकनीक प्रयोग में पीछे नहीं हैं और आधुनिक उपकरणों जैसे पीपीटी स्लाइड की मदद से विषय को और अधिक रोचक व प्रभावशाली बनाकर बच्चों के समक्ष रख रहे हैं।

प्राचीन शिक्षा और वर्तमान शिक्षाः तुलनात्मक दृष्टि

(1) प्राचीन शिक्षा कक्षाधारित/शिक्षकाधारित थी, वर्तमान में ऐसा नहीं है। आज व्हाट्सऐप, पॉवर प्वाइंट, ऑनलाइन क्लास, स्काईपी आदि की सहायता हर वक्त उपलब्ध है।

(2) प्राचीनकाल में शिक्षा का माध्यम केवल श्रवण था। चूंकि कक्षा के सभी बच्चे एकसमान संग्राहक नहीं होते हैं, अतः आज विद्यार्थी की ग्रहण क्षमता को ध्यान में रखकर विषय का पठन–पाठन होता है।

(3) प्राचीनकाल में शिक्षा के दो ही घटक होते थे– शिष्य–शिक्षक। वर्तमान परिस्थितियों में अभिभावकों के शामिल होने से गुरू–अभिभावक दोनों मिलकर बच्चे को सींचते हैं।

शिक्षा का बदलता स्वरूपः गुण–दोष

पहले की शिक्षा में शिक्षक महत्त्वपूर्ण था। विद्यार्थी और अभिभावक दोनों के दिलों में शिक्षक की छवि श्रद्धेय की थी, परंतु आज के परिवेश में शिक्षक के प्रति सम्मान की भावना कहीं खोती नजर आ रही है। आज की शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों का लोप हो गया है। आज सदाचार, सभ्यता, संस्कृति, सद्भाव, सद्गुण इत्यादि नजर नहीं आते। आज शिक्षा का उद्देश्य ही बदल गया है। ''सा शिक्षा या नियुक्तये'' अर्थात शिक्षा वह है जो हमें नियुक्ति प्राप्त कराये।

वस्तुतः शिक्षा के बदलते परिवेश में जहाँ विशेष लाभ हैं, वहीं कहीं न कहीं कुछ हानियाँ भी हैं। अतः बदलते परिवेश में विद्यार्थियों को नीति संबंधी ज्ञान देना नितांत आवश्यक है, जिससे आज की पीढ़ी अच्छे भारतीय नागरिक बनें और विश्व में भारत का नाम रोशन करें। यह शिक्षा द्वारा ही संभव है।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'शिक्षा का बदलता स्वरूप'

श्री अमोल विलासराव पाठक
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, कैगा
संयुक्त प्रथम पुरस्कार

प्राणियों को ज्ञान से सिंचित करने का चिरंतन कार्य शिक्षा निःसंदेह कर रही है!

शिक्षा को कई तरीके से परिभाषित किया गया है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने में बौद्धिक संतुष्टि तो प्राप्त होगी लेकिन शिक्षा का वास्तविक आशय, दृष्टिकोण प्राप्त करना केवल परिभाषा जान लेने से कठिन होगा। वास्तव में पाठशाला के अंदर और बाहर जो कुछ भी अच्छा या बुरा होता है, उन सबको लेकर शिक्षा की व्यवस्था पर चर्चा होती रही है। मौजूदा शिक्षा व्यवस्था के बारे मे चर्चा करने के लिए शिक्षा के कई अन्य आयाम और विभिन्न दृष्टिकोण अपनाने होंगे।

शिक्षा से बढ़ती अपेक्षाएँ

भारत मे शिक्षा का इतिहास भारत वर्ष जितना ही प्राचीन है। अनेक युगों से शिक्षा उत्क्रांति की अवस्थाओं से गुजर कर प्रगतिपथ पर अग्रसर है। किसी विशिष्ट वर्ग की निजी व्यवस्था से शुरू होकर आज शिक्षा सभी का मौलिक अधिकार बन चुकी है। शिक्षा का क्षेत्र अविश्वसनीय तरीके से व्यापक हो रहा है। परन्तु इस बढ़ते बदलाव के साथ शिक्षा के प्रति हमारी अपेक्षाओं मे भी काफी बदलाव आया है। अध्यात्मिक उन्नयन और विषय ज्ञान– ये शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य आज अतीत बन चुके हैं। इनकी जगह व्यावसायिक कार्यक्षमता और आर्थिक विकास ने ली है। शिक्षा एक द्वंद्व से गुजर रही है। जिनके परिणाम स्वरूप स्पर्धा और आर्थिक दबाव से हर शिक्षार्थी गुजर रहा है। शिक्षा का बदलता स्वरूप तब और अब पर चर्चा करें तो सहजता बनाम स्पर्धा तथ्य उभरता है।

शिक्षा का विस्तार समझने के लिए बहुत पुराने समय में जाकर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है।

अंग्रेजी शासनकाल से समकालीन युग तक पिछले शतक में शिक्षा मे आए बदलाव शिक्षा के भविष्य की दिशा भली–भाँति निश्चित करते हैं। ब्रिटिश युग मे अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें मजबूत करने के लिए शिक्षा का उपयोग हुआ। आज वही शिक्षा समाज परिवर्तन का उचित माध्यम बन चुकी है। लेकिन शिक्षा व्यवस्था को चिकित्सक रूप से देखो तो सामाजिकता का अभाव दिखता है। बारहवीं के एक छात्र का उदाहरण लेते हैं। डॉक्टर बनने के लिए उस छात्र को एक निश्चित परीक्षा और निश्चित चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। डॉक्टरी व्यवसाय के लिए आवश्यक सेवावृत्ति और चरित्र का इस चयन प्रक्रिया में कोई स्थान नहीं। आर्थिक सक्षमता और बौद्धिक क्षमता इन दो गुणों के बल पर डॉक्टर बनना उस छात्र को सहज हासिल होता है। इस प्रकार बने डाक्टर में आवश्यक चरित्र, सेवावृत्ति उसमें होंगे इसकी कोई गारंटी नहीं और जिसके पास ये गुण हैं उसे डॉक्टर बनने का अवसर मिलेगा, इसकी भी कोई गारंटी नही। अभिजात मूल्यों से भटकती शिक्षा आज संख्यात्मक मात्रा में भले ही बढ़ी हो, सामाजिकता का अभाव स्पष्ट दिखता है। डॉक्टरी व्यवसाय में अराजकता का अनुभव आज हम अक्सर ही करते हैं। समाज में ऐसे अन्य कई व्यवसाय हैं। मौजूदा शिक्षा व्यवस्था उसकी अराजकता का प्रमुख कारण बन चुकी है।

आधारभूत संरचना का महत्त्व

उपलब्ध आधारभूत संरचना और तंत्रज्ञान के माध्यम से आज की शिक्षा क्षितिजपार के लिए सक्षम है। आधारभूत संरचना की उपलब्धता पाठशाला या किसी भी शैक्षणिक संस्था की प्राथमिक जरुरत बन चुकी है। लेकिन इसका अर्थ ये कदापि नहीं कि शिक्षा के इस आयाम से सब कुछ हासिल किया है। आकड़े यह प्रमाणित करते हैं कि आधारभूत संरचना के क्षेत्र में हमने तेज विकास किया है। लेकिन स्वच्छता, आईसीटी, शुद्ध पेय जल, खेल मैदान उपलब्धता में अभी भी सुधार की आवश्यकता है। नगर निगम और जिला परिषद् के अनगिनत विद्यालय सुविधाओं के अभाव में बंद होने की कगार पर हैं। वहीं दूसरी ओर आधारभूत सुविधाओं से फले–फूले निजी विद्यालयों का भविष्य उज्ज्वल है। आधारभूत संरचना शिक्षा की व्यवस्था का अंग है, उसका एक व्यापार के रूप में प्रसार समाज को क्या दिशा देगा? प्रश्न हमारे लिए सोचनीय है।

शिक्षा – एक प्रयोग केंद्र

शिक्षा एक सामाजिक संस्था है। समाज के विचार अगली पीढ़ी तक प्रसारित करना शिक्षा व्यवसाय का परम कर्तव्य माना गया है। परिणाम स्वरूप राजसत्ता और धर्मसत्ता के प्रभाव से शिक्षा अपने आप को अभी भी अलग नहीं कर पाती है। किसी भी सरकार के पाँच साल शिक्षा व्यवस्था में नए बदलाव लेकर आते हैं। एक शिक्षक के कंधे पर हजारों सालों की परंपरा का बोझ है।

शारीरिक शिक्षा का महत्व

ब्रिटिश युग में शारीरिक शिक्षा को अधिक महत्व नहीं दिया गया। कारण जो भी होंगे। लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा में शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य किया गया है जो एक महत्वपूर्ण कदम है।

समय वैश्वीकरण का है, इसलिए इसका परिणाम शिक्षा व्यवस्था पर होना निश्चित है। दुनिया के चित्रपटल पर शिक्षा के बारे मे देश को आगे बढ़ाने के लिए अन्य देशों के शिक्षा मॉडल हमने अपनाये हैं। लेकिन क्या यहाँ की व्यवस्था के लिए वे मॉडल उपयोगी हैं? वैश्वीकरण के चक्कर में देश की बुनियादी व्यवस्था को हम भूल रहे हैं।

प्राणियों को ज्ञान से सिंचित करने का चिरंतन कार्य शिक्षा निःसंदेह कर रही है। कुछ समस्याएँ, कुछ बाधाएँ हमें प्रभावित कर सकती हैं, लेकिन शिक्षा सदैव आशा पुंज से प्रकाशित रहती है और अपना पथ सुनिश्चित करती है।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'शिक्षा का बदलता स्वरूप'

आज का युवा मात्र सामाजिक रूप से ही नहीं, बल्कि वैचारिक रूप से भी स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सकता है!

श्री सतीश एम. मेश्राम
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, अणुपुरम
संयुक्त प्रथम पुरस्कार

"शिक्षा है अतुल्य गहना,
उससे कभी पीछे न रहना।
रोटी, कपड़ा और मकान,
शिक्षा से बनेगा देश महान।"

शिक्षा के बदलते स्वरूप को समझना है तो हमें व्यापक विचार करना होगा। मध्ययुगीन शिक्षा धार्मिक एवं व्यावसायिक थी। जिज्ञासु वृत्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्क भावना– इनका अभाव था। आधुनिक शिक्षा की दृष्टि से इसाई धर्म प्रचारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन धर्म प्रचारकों ने पाठशालाएँ शुरू कीं और अनेक किताबें प्रकाशित कीं।

18वे शतक में भारतीय शैक्षणिक केंद्र लुप्त जैसे हो चुके थे। देश में लगातार बदलते राजनीतिक घटनाक्रम के कारण विद्यार्थी और शिक्षक का पठन–पाठन बुरी तरह प्रभावित हुआ। मुस्लिम शासन के दौरान विद्यालयों को मदद कम हुई। वॉरेन हेस्टिंग्ज अपने पत्र में कंपनी के संचालक को लिखते हैं कि उत्तर और दक्षिण भारत के नगरों में धन, जन और इमारतों की योग्य सुविधा ना होने की वजह से विद्यालयों की स्थिति अधिक खराब थी। 1789 में वॉरेन हेस्टिंग्ज ने कोलकाता में एक मदरसा स्थापित किया। वहाँ अरबी एवं फारसी का अध्ययन किया जाने लगा। हिंदू धर्म, साहित्य एवं कानून

का अध्ययन करने के लिए बनारस में संस्कृत महविद्यालय शुरू किया। चूंकि, सत्ता ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों में थी तो धर्म प्रचारकों ने भारतीय शिक्षण पद्धति को पीछे करते हुए अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य साहित्य एवं विचारों का प्रसार करने पर अधिक जोर दिया। 1800 में वेलेस्ली ने कंपनी के प्रशासनिक अधिकारीयों को शिक्षा देने के लिए कोलकाता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।

1854 के वूड रिपोर्ट के लिए नियंत्रण मंडल के अध्यक्ष के रूप में चार्ल्स वूड को चुना गया। उन्होंने भारत सरकार को एक नई योजना भेजी। यही योजना वूड रिपोर्ट के रूप में पहचानी जाती है। उसके अनुसार प्राथमिक शिक्षा से लेकर विद्यापीठ स्तर की शिक्षा के लिए एक व्यापक योजना तैयार की गयी। इस रिपोर्ट के उपरांत भारत में शैक्षणिक प्रगति का पुनरवलोकन करने के लिए विलियम हंटर की अध्यक्षता में एक आयोग स्थापित किया गया। आयोग ने स्पष्ट किया कि प्राथमिक शिक्षा के प्रसार एवं विकास की जिम्मेदारी सरकार की है। डब्ल्यू हंटर की अध्यक्षता में स्थापित हंटर आयोग ने सभी प्रान्तों में दौरे किए और निम्न निष्कर्ष दिए–

1. प्राथमिक शिक्षा के सुधार की ओर सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए। स्थानीय भाषाओं का उपयोग माध्यम के रूप में होना चाहिए।
2. माध्यमिक शिक्षा के दो प्रकार– एक साहित्यिक एवं दूसरा व्यावसायिक होने चाहिए।
3. शिक्षा क्षेत्र में निजी प्रयासों को अवसर देना चाहिए।
4. छोटे शहरों में स्त्रियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था नहीं होने पर आयोग ने खेद व्यक्त किया और नारी शिक्षा को बढ़ावा देने की सिफारिश की।

इसके बाद शिक्षा के विकास के लिए अनेक आयोग बने और शिक्षा का स्वरूप बदला। केंद्र सरकार से ज्यादा प्रांतीय सरकारों ने शिक्षा योजना पर अमल किया। इसके साथ–साथ परोपकारी लोगों के प्रयासों से शिक्षा का विकास क्रम जारी रहा।

कोठारी आयोग ने स्थापित किया कि शिक्षा एवं संशोधन दोनों ही देश के आर्थिक, सांस्कृतिक और आत्मिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कोठारी आयोग की सिफारिशों पर वर्ष 1968 में भारत सरकार ने शिक्षा संबंधित जो प्रस्ताव मान्य किया उसमें निम्न तत्वों पर बल दिया गया–

1. 14 साल तक के बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा 2. त्रिभाषा सूत्र स्वीकारना 3. क्षेत्रीय भाषा का विकास। 4. जीडीपी का 6 प्रतिशत शिक्षा पर व्यय शिक्षा विषयक राष्ट्रीय नीति में इन सभी बातों पर जोर दिया गया।

शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो जीवन को एक नयी दिशा देता है। यदि शिक्षा का बदलता स्वरूप सही दिशा में हो तो आज का युवा मात्र सामाजिक रूप से ही नहीं बल्कि वैचारिक रूप से भी स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सकता है। आज हम जिस उद्देश्य से बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं उससे पूर्व हमें बच्चों को शिक्षा का महत्त्व समझाना जरूरी है। ''सर्व कुटुम्बकम सर्वस्य'' की भावना उनके भीतर जागृत करें।

शिक्षा का अधिकार कानून अमल में आने से समाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े तबकों, नारी तक शिक्षा पहुंचाकर मुख्यधारा से जोड़ना इस कानून का प्रथम उद्देश्य है। जैसे गुरुकुल शिक्षा छात्रों के बौद्धिक, अध्यात्मिक और आचरण विकास पर केंद्रित थी, आज भी हम शिक्षा के बदलते स्वरूप से यही अपेक्षा करते है की विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता का अभिमान, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय, एकता एवं अखंडता, दृढ़ विश्वास और नैतिक मूल्यों का विकास हो।

"शिक्षा के साथ–साथ कौशल का भी हो विकास
जन–जन बने खास, देश को करे खुशहाल"

तेजी से बदलते परिदृश्य में ऑनलाइन शिक्षा का विकास निश्चित है!

सुश्री सरीफा पिनेरो
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–6, मुंबई
प्रथम पुरस्कार

शिक्षा के बिना ये दुनिया क्या,
कुछ भी नहीं बस अंधकार यहाँ।
शत–शत नमन उन शिक्षकों को,
जिनके कारण रोशन सारा जहाँ।

शिक्षा में ज्ञान, सदाचार, कौशल, नैतिकता और कार्यदक्षता आदि तत्व समाविष्ट हैं जो समाज की एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किए जाते हैं। इस विचार के साथ शिक्षा निरंतर आगे बढ़ती है। शिक्षा के माध्यम से ही बच्चे समाज के आधारभूत मूल्यों, नियमों और व्यवस्थाओं को सीखते हैं।

शिक्षा और वैदिक काल

वैदिक काल में शिक्षा की गुरूकुल व्यवस्था थी। गुरु का स्थान पूजनीय था। शिक्षा के साथ सदाचरण के संस्कार भी दिए जाते थे। आज विद्यार्थियों पर कैरियर बनाने का दबाव है। प्रतिस्पर्धा चरम पर है जिसके लिए पाठ्यक्रम के साथ–साथ अन्य पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक सा हो गया है। आज की शिक्षा बच्चों को अध्यात्मिक तो नहीं बना पाता, लेकिन आज की पीढ़ी के दिमाग में सूचना का भंडार है जो प्रतिस्पर्धी माहौल में आवश्यक प्रतीत होता है।

शिक्षा में कंप्यूटर का योगदान

आज सब कुछ ऑनलाइन है तो शिक्षा इससे अप्रभावित कैसे रह सकती है। अनेक ऑनलाइन कोर्स, डेटा, पुस्तकें उपलब्ध हैं। ई–पुस्तकालय ऐप के माध्यम से पुस्तक प्रेमी

दुनिया भर की पुस्तकें घर बैठे पढ़ सकते हैं। आज विद्यार्थी विभिन्न कंप्यूटर अनुप्रयोगों की सहायता से अपने नोट तैयार करते हैं। बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए सरकार भी अपने डिजिटल इंडिया अभियान के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दे रही है। दूरस्थ शिक्षा ने अध्ययन–अध्यापन को आसान कर दिया है। तेजी से बदलते परिदृश्य में ऑनलाइन शिक्षा का विकास निश्चित है। पिछले दशक में भारत में शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है जिसमें दो कारक महत्त्वपूर्ण रहे हैं– एक तकनीक का प्रयोग और दूसरा भारत सरकार का निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम, 2009। साक्षरता बढ़ने के साथ–साथ वर्तमान शिक्षा तकनीक आधारित और कैरियर उन्मुख है।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

....स्वामी दयानंद

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (गैर-शिक्षक क वर्ग) : 'अनुशासन जीवन के लिए कितना आवश्यक'

श्री पवन कुमार ठकुर
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, नरवापहाइ
प्रथम पुरस्कार

विद्यार्थी की सफलता, खिलाड़ी की जीत, कर्मचारी की उपलब्धियाँ- अनुशासन से ही साध्य हैं!

अनुशासन ही जीवन है जो मनुष्य को जीना सिखाता है। अनुशासन जीवन भर हमें नियंत्रित करता है। अच्छे समाज के निर्माण अनुशासन की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अनुशासन का पाठ घर से ही आरंभ हो जाता है और यह निरंतर चलता रहता है। अनुशासन की निरंतरता मनुष्य को एक व्यक्तित्व प्रदान करती है। निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों में अनुशासन आवश्यक है। अनुशासन सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

मनुष्य का प्रत्येक कृत्य अनुशासन से नियंत्रित होता है। आपको यदि कोई बात अपने वरिष्ठों के सक्षम रखनी है तो इसके लिए एक निर्धारित तरीका है जिसका आपको अनुसरण करना होता है। यही अनुसरण ही अनुशासन है। बड़ों का छोटों के साथ, छोटों का बड़ों के साथ, परिचितों और अपरिचितों का संवाद एक दायरे में होता है। यह दायरा संवाद में शामिल लोगों के प्रकार से तय होता है। इस प्रकार जो दायरा बनता है वह अनुशासन है।

जब हम किसी के साथ पत्राचार करते हैं तो यहाँ भी भाषा शब्दों का चुनाव संबोधिती के हिसाब से तय होता है। इस प्रकार से यहाँ भी अनुशासन आवश्यक है।

विद्यार्थी जीवन में तो अनुशासन को प्राथमिकता प्राप्त है। बिना अनुशासन के शिक्षा ग्रहण नहीं की जा सकती। गुरूजन विद्यार्थियों को पुस्तकीय पाठ के साथ–साथ अनुशासन का पाठ भी पढ़ाते हैं। अनुशासन के सहज

उदाहरण हमें प्रकृति में मिलते हैं। पशु–पक्षी और जानवर भी अनुशासित जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी दिनचर्या अविचलित रहती है। प्रातः काल में पक्षियों का कोलाहल, नदियों का कलकल अनुशासन के कारण ही मधुर संगीत की तरह दिल को छूते हैं। ऋतुओं का बदलना और ऋतुओं में बदलाव के साथ प्रकृति का रंग बदलना– यह सब अनुशासन ही दर्शाता है। हमारी प्रकृति सदैव अनुशासित रही है। मनुष्य के अनुशासनहीनता के कारण प्रकृति को भी असंतुलन झेलना पड़ता है जिसके परिणाम मानव जाति के लिए हितकर नहीं होते और फिर हम इसके लिए प्रकृति दोष देते हैं। यह बिल्कुल तर्कसंगत नहीं है। मानव हित में यह आवश्यक है कि हम समय रहते इस पर पुनर्विचार करें और प्रकृति के अनुसार चलें।

समाज में वित्तीय या शारीरिक रूप से कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो और कितने भी उच्च पद पर बैठा हो, सभी अनुशासन की सीमाओं में बंधे हैं और कोई भी इसका उल्लंघन करता है तो वह समाज में सम्मान खोने को ओर अग्रसर होता है और अंततः समाज ऐसे लोगों का बहिष्कार करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि समाज में कोई भी व्यक्ति अनुशासन से ऊपर नहीं है।

विद्यार्थी की सफलता, खिलाड़ी की जीत, कर्मचारी की उपलब्धियाँ– अनुशासन से ही साध्य हैं। इसलिए, जीवन में अनुशासन से कभी विमुख नहीं होना चाहिए।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (गैर-शिक्षक ख वर्ग) : 'अनुशासन जीवन के लिए कितना आवश्यक'

श्रीमती संध्या राकेश आंब्रे
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–5, मुंबई
प्रथम पुरस्कार

उच्च अनुशासन अपनाकर हमें समाज में उदाहरण स्थापित करने चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी इनसे प्रेरित हो!

स्वयं पर स्वयं का शासन कहलाता है 'अनुशासन'
यह कोई बंधन नहीं है बल्कि अपने सर्वांगीण विकास एवं उन्नयन का साधन है। मनुष्य अपने जीवन की शुरूआत ही अनुशासन से करता है। हमारी श्वसन प्रक्रिया भी एक अनुशासित क्रिया है। भूख, प्यास, नींद– सब एक अनुशासन हैं। जब भी हम अनुशासन तोड़ने की हिमाकत करते हैं, जीवन पर प्रश्न चिह्न खड़ा हो जाता है। वास्तव में यह एक सृष्टि जनित नियम है जिसमें प्रकृति भी बँधी है।

अनुशासन का अंग्रेजी पर्याय शब्द है– 'Discipline' जो अंग्रेजी के 'Disciple' शब्द से आया है जिसका अर्थ शिष्य है। एक शिष्य अपने गुरू के दिखाए पथ पर चलता है और दी गई शिक्षाओं का पालन करता है। इस प्रकार अनुशासन अच्छी बातों का अनुसरण करना या अनुगामी होना है। दूसरों की अच्छी आदतों का अनुसरण और नियमों का पालन हमारे जीवन को सफल और स्तरीय बनाते हैं। इसका लाभ न केवल अनुशासन का पालन करने वाले व्यक्ति बल्कि समाज, देश और विश्व को भी होता है।

महात्मा गांधी राष्ट्रपिता कहे जाते हैं। इसके पीछे उनका समाज के प्रति योगदान और उच्च अनुशासन है। वास्तव में हमारे जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है।

हमारे दैनिक क्रियाकलाप से लेकर भविष्य की योजनाएँ अनुशासन से कार्यान्वित होती हैं। अनुशासन से व्यक्ति महान की श्रेणी में स्थान प्राप्त करते हैं और अनुकरणीय हो जाते हैं।

अनुशासन का सबसे बड़ा उदाहरण हमारी प्रकृति है। प्रकृति की ऋतुएँ, चंद्रमा, सूर्य, तारे, बादल– ये सभी सृष्टि की व्यवस्था में रहते हैं। इनके तनिक से विचलन से पृथ्वी पर हाहाकार मच जाता है। जरा कल्पना कीजिए– क्या हो यदि सूरज अचानक छुट्टी पर चला जाए या किसी दिन अस्त ही न हो। लेकिन ऐसा कभी नहीं होता। प्रकृति अपना अनुशासन स्वयं नहीं तोड़ती। लेकिन जब हम अनुशासन पथ से विचलित हो जाते हैं और प्राकृतिक संसाधनों को दुरुपयोग करते हैं, तो प्रकृति का संतुलन गड़बड़ा देते हैं जिसका परिणाम अहितकर होता है।

आपने अनुभव किया होगा कि जब हम अपने निर्धारित समय से इतर कार्यालय या किसी कार्यक्रम में पहुँचते हैं तो क्या प्रतिक्रिया मिलती है। कार्य–शैली की अनियमितता के क्या परिणाम होते हैं। निश्चित रूप से यह अनुभव सुखद नहीं होगा।

अनुशासन जीवन का अभिन्न हिस्सा है। हमें अपने जीवन में अनुशासन को अपनाना चाहिए। हम जो भी करते हैं आने वाली पीढ़ी उनका अनुसरण करती है। अतः उच्च अनुशासन अपनाकर हमें समाज में उदाहरण स्थापित करने चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी इनसे प्रेरित हो और उज्ज्वल भारत का निर्माण हो।

निबंध लेखन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (गैर-शिक्षक ग वर्ग) : 'अनुशासन जीवन के लिए कितना आवश्यक'

श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन
केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
प्रथम पुरस्कार

अनुशासन अपनाए, जीवन सजाएँ!

अनुशासन का अर्थ है– 'स्व–नियंत्रण'। ऐसा नियंत्रण जिसमें मनुष्य अपनी गतिविधियों को समाज के अनुरूप रहकर पूरा करता है। एक सुखद, सफल और शांतिपूर्ण जीवन के लिए अनुशासन का होना बहुत आवश्यक है। अनुशासन व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाता है। अच्छे नागरिक देश की छवि बनाते हैं।

अनुशासन शब्द दो शब्द से मिलकर बना है–

अनुशासन = अनु + शासन

जिसका अर्थ है उस शासन या व्यवस्था का अनुकरण जिसमें हम निवास करते हैं। ऐसा अनुकरण जिससे समाज, देश और स्वयं का हित हो।

अनुशासन की शुरूआत स्वयं और दैनिक गतिविधियों से होती है। समय पर सोना–जागना, खाना–पीना, साफ–सफाई सब अनुशासन की माँग करते हैं। इनमें अनुशासनीय लापरवाही परेशानी का कारण बनती है। वास्तव में अनुशासन जिम्मेदारियों को सही प्रकार से पूरा करने का स्वयं नियंत्रण हैं। अनुशासन आपको धैर्यवान बनाता है और आपको अपनी इच्छाओं पर जीतना सिखाता है। अनुशासन के लेकर कभी मन में कोई संशय आए तो इतना जान लीजिए कि अनुशासन का पथ छोड़ने से हो सकता है कि तात्कालिक फायदा हो, लेकिन भविष्य के लिए बिल्कुल सही नहीं है।

कार्य स्थल पर अनुशासन का अलग महत्त्व है। काम के प्रति ईमानदारी और अनुशासन आपकी और आपके संगठन जहाँ आप कार्यरत हैं, दोनों की तरक्की निर्धारित करते हैं। अनुशासन का कार्यदक्षता से सीधा संबंध है। अनुशासन से न केवल कार्य उत्पादकता बढ़ती है बल्कि स्वयं को संतुष्टि का अनुभव होता है।

अनुशासन से जोड़ो रिश्ता, आज का काम अभी कर डालो।

अनुशासन हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। लेकिन इसकी भी अपनी एक सीमा है। अनुशासन जरूरी है, लेकिन कड़ा अनुशासन हो– यह जरूरी नहीं है। हम 21वीं सदी में हैं। आज के बच्चे और युवा पहले की तुलना अधिक समझदार और जागरुक हैं। बलपूर्वक उन पर अनुशासन थोपना और पालन करवाना संभव नहीं है। बेहतर होगा कि कोई भी अनुशासन थोपने से पहले उसके महत्त्व और जीवन पर प्रभाव को लेकर खुली चर्चा की जाए। उनके विश्वास को जीता जाए। कार्यालयों में सब कुछ अनुशासन के साथ ही संचालित होता है। समय पर कार्यालय पहुँचने से लेकर वरिष्ठों और उच्चाधिकारियों से बात करने सब में अनुशासन का महत्त्व है। इसी अनुशासनप्रियता से उत्पन्न माहौल के कारण कार्यालय परिसर कार्य निष्पादन के लिए आज भी उत्तम स्थान हैं।

जीवन के दैनिक क्रियाकलाप, कैरियर और समाज में मान–सम्मान आपके अनुशासन पर निर्भर हैं। समाज और देश की दिशा भी आपके कृत्यों से निर्धारित होती है। आपकी जिम्मेदारी है कि आप अनुशासन को जीवन में शामिल करें और स्वयं व समाज के हित में अपना योगदान कर अच्छे नागरिक बनें।

"आओ, अनुशासन अपनाएँ,
जीवन सजाएँ।"

पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (कला शिक्षक) : 'विज्ञान के चमत्कार'

श्री सुनिल ताथु माली
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–1, जादूगोड़ा
प्रथम पुरस्कार

पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2019 / शीर्षक (अन्य सभी) : 'हमारे अन्नदाता (भारतीय किसान)'

श्रीमती रीतू सिंह किशन सिंह
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, काकरापार

प्रथम पुरस्कार

पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2018/ शीर्षक (कला शिक्षक) : 'खेलों में नारी शक्ति'

श्री संजय कुमार
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, कुडनकुलम
प्रथम पुरस्कार

पोस्टर एवं स्लोगन प्रतियोगिता–2018 / शीर्षक (अन्य सभी) : 'गाँव का एक दृश्य'

सुश्री सरीफा पिनेरो
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–6, मुंबई
प्रथम पुरस्कार

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा–2019

प.ऊ.कें. विद्यालयों और केंद्रीय कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताएँ					
क्र सं	प्रतियोगिता	तारीख	वर्ग	शीर्षक	पुरस्कार
1	पोस्टर एवं स्लोगन	16/09/2019	कला शिक्षक	विज्ञान के चमत्कार	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 6 पुरस्कार)
			अन्य सभी	गाँव का कोई दृश्य	
2	हिंदी निबंध लेखन (शिक्षक)	17/09/2019	क , ख एवं ग तीन वर्ग	परमाणु ऊर्जा : भविष्य की ऊर्जा आवश्यकता	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
	हिंदी निबंध लेखन (गैर-शिक्षक)		क , ख एवं ग तीन वर्ग	मानव जीवन शैली: तब और अब	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
3	हिंदी मौलिक कविता लेखन (शिक्षक)	18.09.2019	क वर्ग	नए सपने/नई आशाएँ	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
			ख वर्ग	सामाजिक एकता	
	हिंदी मौलिक कविता लेखन (गैर-शिक्षक)		ग वर्ग	सच्ची मित्रता	
4	हिंदी टंकण (शिक्षक)	19.09.2019	शिक्षक वर्ग	टंकण प्रश्न पत्र	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
	हिंदी टंकण (गैर-शिक्षक)		गैर-शिक्षक वर्ग	टंकण प्रश्न पत्र	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा–2019

हिंदी पखवाड़ा - 2019 के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की सूची						
प्रतियोगिता एवं आयोजन तारीख	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र.सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
निबंध लेखन (शिक्षक वर्ग)	17-09-2019 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	1	श्री सी.एल. शर्मा (1629)	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	प्रथम
			2	श्री खीमाराम (2865)	प.ऊ.कें.वि.-2, तारापुर	प्रथम
			3	श्री रवीन्द्र गेहलोत (3099)	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर	द्वितीय
			4	श्रीमती कुमारी किरण (2623)	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगुड़ा	तृतीय
		ख	5	सुश्री पूजा कुमारी (3251)	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	प्रथम
			6	श्री विशम्भर शिवाजीराव लें. (3202)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	द्वितीय
			7	श्री भूपेन्द्र भरत ठाकुर (3221)	प.ऊ.कें.वि., कैगा	तृतीय
		ग	8	श्रीमती अदिति डे (2895)	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	प्रथम
			9	श्रीमती शेख शाहीन (2985)	प.ऊ.कें.वि., कैगा	द्वितीय
			10	श्रीमती एस. अनीता (2685)	प.ऊ.कें.वि.-1, कल्पाक्कम	तृतीय
निबंध लेखन (अधिकारी/ लिपिक वर्ग)	17-09-19 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	11	श्री रमेश तिलवे (2017)	प.ऊ.कें.वि.-2, रावतभाटा	प्रथम
			12	श्री कृष्ण कुमार शर्मा (2131)	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगुड़ा	द्वितीय
			13	श्री पवन कुमार ठाकुर (2417)	प.ऊ.कें.वि., तुरामडीह	तृतीय
		ख	14	सुश्री छाया माधव दिघे (3081)	वेतन अनु., केंद्रीय कार्यालय	प्रथम
			15	श्रीमती स्मिता शंकर शिर्के (2755)	स्थापना अनु., केंद्रीय कार्यालय	द्वितीय
			16	श्रीमती विद्या राजेन्द्र बोबले (2119)	वेतन अनु., केंद्रीय कार्यालय	द्वितीय
			17	श्रीमती अनुजा दी. आंबेतकर (3082)	का. एवं गो., केंद्रीय कार्यालय	तृतीय
		ग	18	श्रीमती शोभना डी. पनीकर (1361)	का. एवं गो., केंद्रीय कार्यालय	प्रथम
			19	श्रीमती एम. लता (2107)	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			20	श्री जॉन एंटोनी (2324)	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	तृतीय

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा–2019

पोस्टर एवं स्लोगन	16-09-2019 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय	कला शिक्षक	21	श्री सुनिल ताथु माली (3183)	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा	प्रथम
			22	श्री संजय कुमार (3229)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	द्वितीय
			23	श्री राजेश कुमार (2997)	प.ऊ.कें.वि., काकरापार	तृतीय
		अन्य सभी	24	श्रीमती रीतू सिंह किशन सिंह (3230)	प.ऊ.कें.वि., काकरापार	प्रथम
			25	श्रीमती हरिनी शेट्टी (2665)	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	द्वितीय
			26	श्रीमती लक्ष्मी शेखरन (3013)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	तृतीय
मौलिक कविता लेखन	18-09-2019 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	27	श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव (1223)	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	प्रथम
			28	श्री खीमाराम (2865)	प.ऊ.कें.वि.-2, तारापुर	द्वितीय
			29	श्रीमती सुनीता सुचारी (2829)	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगोड़ा	तृतीय
			30	श्रीमती भावना अधिकारी (3270)	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	तृतीय
		ख	31	श्री आजिनाथ गायकवाड़ (3198)	प.ऊ.कें.वि.-2, तारापुर	प्रथम
			32	श्री खांगर नंदनकिशोर महादेव (3309)	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगोड़ा	द्वितीय
			33	श्रीमती आमला प्र. पंडित (2038)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
		ग	34	श्रीमती टी.सी. प्रीति (2498)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	प्रथम
			35	श्रीमती एडविएना मारिया डव (2762)	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			36	श्रीमती लूसी एंटोनी (2021)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
हिंदी टंकण	19-09-2019 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	शिक्षक	37	श्रीमती साक्षी शरद शिंगटे (2542)	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	प्रथम
			38	श्रीमती मस्की संगीता (2749)	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			39	श्री गौरव कुमार (3215)	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुड़ा	द्वितीय
			40	सुश्री संजू यादव (3303)	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	तृतीय
			41	श्रीमती टी. उमा (2723)	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	तृतीय
		लिपिक	42	श्रीमती संध्या राकेश आंब्रे (2811)	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	प्रथम
			43	श्रीमती एम. लता (2107)	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			44	श्रीमती वीना वि. राऊल (2226)	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	तृतीय

हिंदी पखवाड़ा–2019 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम, स्थान– प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

आमंत्रित गणमान्यों के कर–कमलों से हिंदी पखवाड़ा–2019 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ

मंचासीन गणमान्य

श्री वि. वैंकन्ना,
समन्वयक प्रधानाचार्य,
प.ऊ.कें.वि., मुंबई

श्री ए.के. वानखेड़े,
उत्कृष्ट वैज्ञानिक, भा.प.अ.कें.
एवं अध्यक्ष, स्था. प्रबंधन
समिति, प.ऊ.कें.वि., मुंबई

श्री जी.एस.आर.के.वी. शर्मा
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी,
प.ऊ.शि.सं., मुंबई

श्री आनंद कुमार,
प्रधानाचार्य,
प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारी

हिंदी पखवाड़ा–2019 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम, स्थान– प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

श्री ए.के. वानखेड़े, अध्यक्ष, स्थानीय प्रबंधन समिति, प.ऊ.कें.वि., मुंबई
स्थापना अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए

हिंदी पखवाड़ा–2019 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम, स्थान– प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

श्री ए.के. वानखेड़े, अध्यक्ष, स्थानीय प्रबंधन समिति, प.ऊ.कें.वि., मुंबई
वेतन अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को उप–विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा–2018

प.ऊ.कें. विद्यालयों और केंद्रीय कार्यालय के लिए आयोजित प्रतियोगिताएँ					
क्र सं	प्रतियोगिता	तारीख	वर्ग	शीर्षक	पुरस्कार
1	पोस्टर एवं स्लोगन	01/09/2018	कला शिक्षक	"खेलों में नारी शक्ति"	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 6 पुरस्कार)
			अन्य सभी	'हमारे अन्नदाता (भारतीय किसान)"	
2	हिंदी निबंध लेखन (शिक्षक)	10/09/2018	'क', 'ख' एवं 'ग' तीन वर्ग	'शिक्षा का बदलता स्वरूप (तब और अब)''	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
	हिंदी निबंध लेखन (गैर-शिक्षक)		'क', 'ख' एवं 'ग' तीन वर्ग	'अनुशासन जीवन के लिए कितना आवश्यक''	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
3	हिंदी टंकण (शिक्षक)	17.08.2018	शिक्षक वर्ग	टंकण प्रश्न पत्र	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
	हिंदी टंकण (गैर-शिक्षक)		गैर-शिक्षक वर्ग	टंकण प्रश्न पत्र	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
4	हिंदी काव्य-पाठ	20.08.2018	'क', 'ख' एवं 'ग' तीन वर्ग	लागू नहीं	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
5	हिंदी वक्तृत्व प्रतियोगिता	27.08.2018	'क' वर्ग	'स्मार्ट क्लास अध्ययन-अध्यापन के लिए कितना उपयोगी?''	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
			'ख' वर्ग	'नौकरी बनाम स्व-रोजगार''	
			'ग' वर्ग	स्वच्छ भारत अभियान-कितना सफल?	
6	मौलिक कविता लेखन	30.11.2018 प्रविष्टि द्वारा	'क' वर्ग	'मातृ भाषा'	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
			'ख' वर्ग	'पिता'	
			'ग' वर्ग	'शरद ऋतु'	

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा–2018

हिंदी पखवाड़ा-2018 के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की सूची

सभी 31 परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालयों और केंद्रीय कार्यालय के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिताएं

योगिता एवं योजन नांक	आयोजन दिनांक एवं स्थल	वर्ग	क्र.सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
ध्र लेखन शिक्षक वर्ग)	10-09-18 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	1	श्री श्याम कुमार सोनी	प.ऊ.कें.वि.-4, रावतभाटा	प्रथम
			2	श्री योगेन्द्र कुमार	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	प्रथम
			3	श्रीमती शोभा शर्मा	प.ऊ.कें.वि.-3, रावतभाटा	द्वितीय
			4	श्रीमती गीता शर्मा	प.ऊ.कें.वि., नरौरा	द्वितीय
			5	श्रीमती पूनम बहुगुणा	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	तृतीय
		ख	6	श्री अमोल विलासराव पाठक	प.ऊ.कें.वि., कैगा	प्रथम
			7	श्री सतीश मनोहर मेश्राम	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	प्रथम
			8	श्री खिल्लाड़े राहुल लक्ष्मण	प.ऊ.कें.वि.-3, रावतभाटा	द्वितीय
			9	श्री शिशिर भड़के	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर	तृतीय
		ग	10	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	प्रथम
			11	श्रीमती मधुरिमा चटर्जी (संविदा)	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	द्वितीय
			12	श्रीमती मस्की संगीता	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	तृतीय
ध्र लेखन गैर-क्षक)	10-09-18 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	13	श्री पवन कुमार ठाकुर	प.ऊ.कें.वि., नरवापहाड़	प्रथम
			14	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	कार्मिक एवं गोपनीय	द्वितीय
			15	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगुड़ा	तृतीय
		ख	16	श्रीमती संध्या राकेश आंब्रे	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	प्रथम
			17	सुश्री छाया माधव दिघे	स्थापना अनुभाग	द्वितीय
			18	श्रीमती अनुजा दीपेश आंबेतकर	कार्मिक एवं गोपनीय	तृतीय
			19	श्री राजन भानुदास गायकवाड़	क्रय अनुभाग	तृतीय
		ग	20	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	केंद्रीय कार्यालय	प्रथम
			21	श्रीमती एम. लता	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			22	श्री जॉन एंटोनी	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	तृतीय
टर एवं गोगन	31-08-18 एवं 01-09-18 प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय	कला शिक्षक	23	श्री संजय कुमार	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	प्रथम
			24	श्री राजेश कुमार	प.ऊ.कें.वि., काकरापार	द्वितीय
			25	श्री एन.के. मोहंती	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	तृतीय
		अन्य सभी	26	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	प्रथम
			27	श्रीमती रीतू सिंह किशन सिंह	प.ऊ.कें.वि., काकरापार	द्वितीय
			28	श्रीमती नीलम महेन्द्र शर्मा	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	द्वितीय

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा–2018

लिक विता खन	31-11-18 तक सभी प.ऊ.कें.वि. और केंद्रीय कार्यालय, मुंबई से प्रविष्टियां आमंत्रित	क	31	श्री रवींद्र गेहलोत	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर	प्रथम
			32	श्रीमती इंदू सिंह	प.ऊ.कें.वि., तुरामडीह	द्वितीय
			33	श्रीमती किरन देवी रजक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	तृतीय
		ख	34	श्री सतीश मनोहर मेश्राम	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	प्रथम
			35	सुश्री वर्षारानी मारुति भिसे	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगुड़ा	द्वितीय
			36	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
		ग	37	श्रीमती भारती एस. कुमार	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	प्रथम
			38	श्रीमती मालती मुरुगन	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	द्वितीय
			39	सुश्री सरीफा पिनेरो	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
केवल मुंबई स्थित परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालयों और केंद्रीय कार्यालय के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिताएं						
य-पाठ	20-08-18 केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	40	श्रीमती नीरजा त्रिपाठी	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	प्रथम
			41	श्री योगेन्द्र कुमार	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	द्वितीय
			42	श्रीमती साक्षी शरद शिंगटे	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	तृतीय
		ख	43	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	प्रथम
			44	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	द्वितीय
			45	श्री युवराज पाटिल	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
		ग	46	श्रीमती मालती मुरुगन	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	प्रथम
			47	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	द्वितीय
			48	श्रीमती भारती एस. कुमार	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	तृतीय
ी टंकण	17-08-2018 प.ऊ.क.म.वि.	शिक्षक	49	श्री जगदीश इसे	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	प्रथम
			50	श्रीमती साक्षी शरद शिंगटे	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	द्वितीय
			51	श्री सी.एल. शर्मा	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	तृतीय
		अन्य सभी	52	श्रीमती संध्या आर. आंब्रे	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	प्रथम
			53	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	कार्मिक एवं गोपनीय	द्वितीय
			54	श्री अदित्य बालासाहेब कालेकर	पेंशन एवं वेतन	तृतीय
हिंदी क्तृत्व	27-08-18 केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	क	55	श्री योगेन्द्र कुमार	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	प्रथम
			56	श्रीमती नीरजा त्रिपाठी	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	द्वितीय
			57	श्री लोकेश जोशी	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	तृतीय
		ख	58	श्रीमती आमला पंडित	प.ऊ.कें.वि.6, मुंबई	प्रथम
			59	श्री विश्वास माने	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	द्वितीय
			60	श्रीमती रेशमा वेंगुर्लेकर	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	तृतीय
			61	श्री के.जे. जॉय	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई	प्रथम

हिंदी पखवाड़ा–2018 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम, स्थान–टी.एस.एच., मुंबई

मंचासीन गणमान्य

श्री कृष्णा शर्मा के.जे.वी.वी., प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ, प.ऊ.शि.सं., मुंबई

श्री जी.एस.आर.के.वी शर्मा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, प.ऊ.शि.सं., मुंबई

श्री एस. सरकार, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प.ऊ.शि.सं., मुंबई

हिंदी पखवाड़ा–2018 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम, स्थान–टी.एस.एच., मुंबई

श्री एस. सरकार, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
स्थापना अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए

हिंदी पखवाड़ा–2018 का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम, स्थान–टी.एस.एच., मुंबई

श्री एस. सरकार, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
वेतन अनुभाग, प.ऊ.शि.सं. को उप–विजेता राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

हिंदी कार्यशाला

आयोजन दिनांक: 07.12.2018
आयोजन स्थान: केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.शि.सं., मुंबई
विषय: प्रथम सत्र: हिंदी तिमाही रिपोर्ट और आवश्यक आंकड़ों का संग्रह
श्री श्याम बाबू, राजभाषा प्रभारी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प.ऊ.शि.सं.
द्वितीय सत्र: कंप्यूटर पर हिंदी में सरकारी कामकाज
श्री संजीब घोष, उप-प्रधानाचार्य एवं उप-प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं.

उपस्थिति:

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विद्यालय/कार्यालय
1.	श्रीमती प्रबीणा शर्मा	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
2.	श्रीमती रत्ना राठोड़	प्र.स्ना.अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
3.	श्रीमती सावित्री तिवारी	प्र.स्ना.अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
4.	श्रीमती निधि चौरसिया	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
5.	श्रीमती अश्विनी सावंत	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
6.	श्री सी.एल.शर्मा	प्र.स्ना.अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
7.	श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
8.	श्रीमती निवेदिता पी.	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
9.	श्रीमती सुनीता रानी कुलपति	प्र.स्ना.अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
10.	श्री योगेन्द्र कुमार	प्र.स्ना.अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
11.	श्रीमती अक्षदा अमोल तोडनकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
12.	श्री अरूण मिंज	प्र.स्ना.अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
13.	श्रीमती वीणा राऊल	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
14.	श्री विजय राम	प्राथमिक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई
15.	श्रीमती वंदना श्रीवास्तव	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई
16.	श्रीमती नेहा प्रमोद भोसले	प्रयोगशाला सहा.(सू.प्रो.)	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई
17.	रामानंद तिवारी	स्नातकोत्तर अध्यापक	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई
18.	श्रीमती अंबिका एस. नायर	सहायक	केन्द्रीय कार्यालय
19.	श्री कृष्णकुमार पी.के.	प्र.स्ना.अध्यापक	केन्द्रीय कार्यालय
20.	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	निजी सचिव	केन्द्रीय कार्यालय

21.	श्रीमती एन. ससिरेखा	प्र.स्ना.अध्यापिका	केन्द्रीय कार्यालय
22.	श्री विकास बाबु तेलगाथोटी	प्र.स्ना.अध्यापक	केन्द्रीय कार्यालय
23.	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत	सहायक	केन्द्रीय कार्यालय
24.	श्री बालकृष्ण सावंत	प्रवर श्रेणी लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
25.	श्रीमती सुखविंदर कौर सैनी	वरिष्ठ लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
26.	श्रीमती श्वेता कांबले	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
27.	श्रीमती नीता रावराने	वरिष्ठ लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
28.	श्रीमती रश्मि अमृते	प्रवर श्रेणी लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
29.	श्रीमती रेशमा अशिष वेंगुर्लेकर	अवर श्रेणी लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
30.	श्री राजन भानुदास गायकवाड	अवर श्रेणी लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
31.	श्रीमती प्रिति एन. काजवे	अवर श्रेणी लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय
32.	श्री अदित्य बालासाहेब कालेकर	अवर श्रेणी लिपिक	केन्द्रीय कार्यालय

आप जिस तरह बोलते हैं,
बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए।
भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

....महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी कार्यशाला

आयोजन दिनांक: 29.06.2019

आयोजन स्थान: केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.शि.सं., मुंबई

विषय: प्रथम सत्र: कार्यालयीन पत्राचार और प्रारूपण व टिप्पण

डॉ. सैयद माजूम रज़ा, सहायक निदेशक (राजभाषा), प.ऊ.वि.

द्वितीय सत्र: सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

श्री संजीब घोष, उप-प्रधानाचार्य एवं उप-प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं.

उपस्थिति:

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विद्यालय/कार्यालय
1.	श्रीमती भारती वानखेड़े	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर
2.	श्रीमती कांचन प्रशांत तामोरे	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, तारापुर
3.	श्री मुनिराम मुर्मु	प्राथमिक शिक्षक	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर
4.	सुश्री प्रतिभा रोकडे	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर
5.	श्री प्रवीनभाई लालसिंगभाई चौधरी	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.कें.वि., काकरापार
6.	श्रीमती मंगला दिलीप खंडीझोड	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
7.	श्री जॉन एंटनी	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
8.	श्रीमती निवेदिता हेमंत पिंगुलकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
9.	श्रीमती सुजाता बी. सावंत	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
10.	श्रीमती मीनाक्षी यल्लप्पा होटकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
11.	श्रीमती सायली राजेन्द्र उतेकर	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई
12.	श्रीमती रेशमा वेंगुर्लेकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
13.	श्रीमती विद्या राजेंद्र बोबले	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय

14.	श्रीमती अक्षदा अमोल तोडणकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
15.	श्रीमती सुजाता प्रशांत तावडे	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
16.	श्रीमती स्मिता शंकर शिर्के	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
17.	श्रीमती माधवी मिलिंद तलाशिलकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
18.	श्रीमती कुमुद धामापुरकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
19.	श्री विकास बाबु तेलगाथोटी	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	केंद्रीय कार्यालय

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

....डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के पदाधिकारियों द्वारा हिंदी कार्यशाला के प्रशिक्षार्थियों को संबोधन

हिंदी कार्यशालाः प्रथम सत्र

ज्ञान स्रोतः डॉ. श्री सैयद मासूम रज़ा,
सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग

हिंदी कार्यशालाः द्वितीय सत्र

ज्ञान स्रोतः श्री संजीब घोष,
उप-प्रधानाचार्य एवं उप-प्रमुख, शैक्षणिक इकाई, प.ऊ.शि.सं.

प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरण

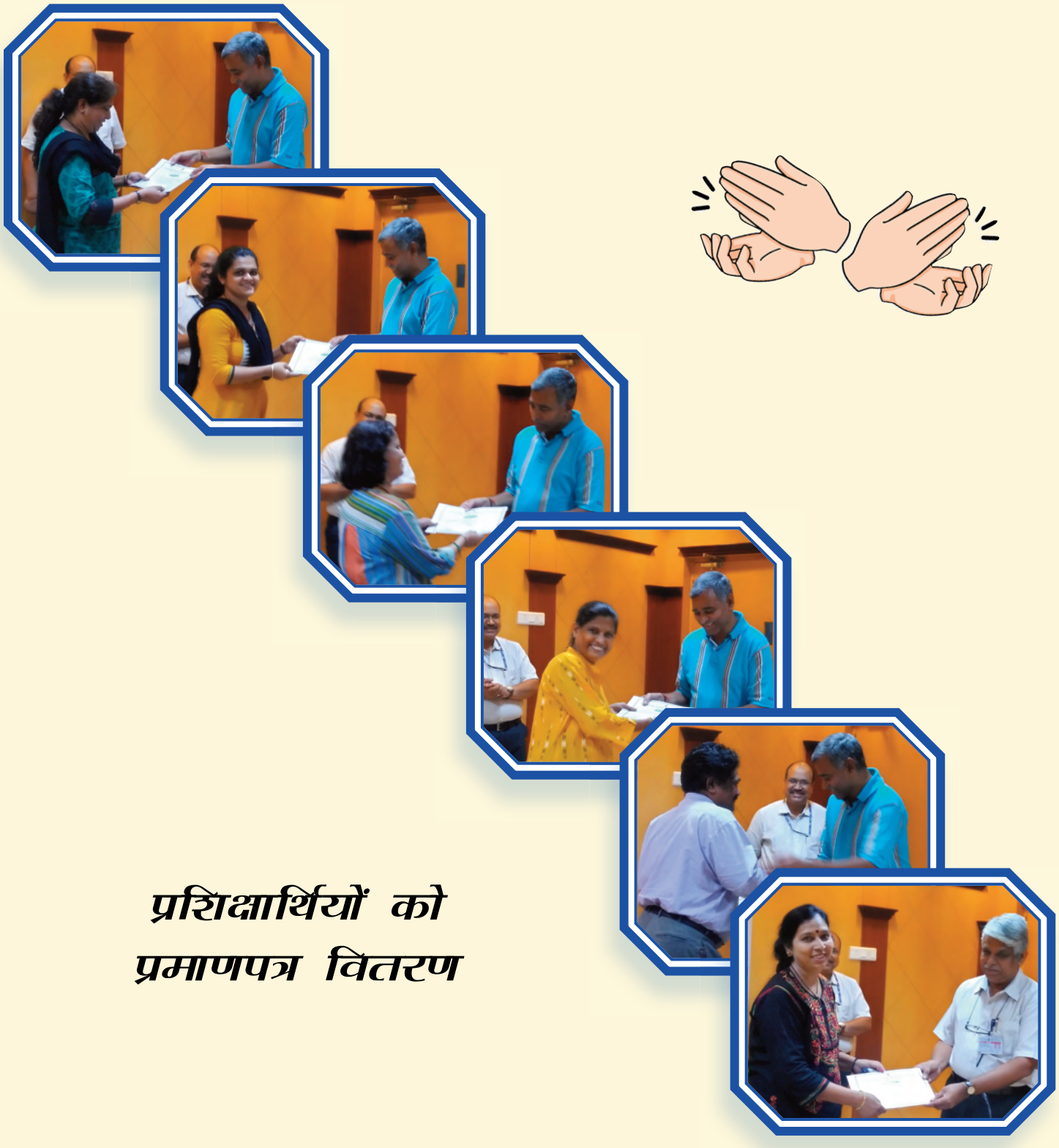

प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरण

प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरण

हिंदी कार्यशाला

आयोजन दिनांक: 21.12.2019

आयोजन स्थान: केंद्रीय कार्यालय, प.ऊ.शि.सं., मुंबई

विषय: प्रथम सत्र: कंप्यूटर पर हिंदी में कार्यालयी कार्य

श्री संजीब घोष, उप-प्रधानाचार्य एवं उप-प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं.

द्वितीय सत्र: राजभाषा नीति और कार्यालयी संक्षिप्त अनुवाद

डॉ. सैयद माजूम रज़ा, सहायक निदेशक (राजभाषा), प.ऊ.वि.

उपस्थिति:

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विद्यालय/कार्यालय
1.	श्री हर्षद सूरती	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर
2.	श्री अभिजीत प्रकाश राऊत	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, तारापुर
3.	श्री चेतन मवडनेरे .	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि., काकरापार
4.	श्री सुरेन्द्र वसंत सोनवणे	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
5.	श्रीमती वीना विलास राऊल	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
6.	श्रीमती निवेदिता हेमंत पिंगुलकर	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
7.	श्रीमती कोमल जयप्रकासन	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
8.	श्रीमती अश्विनी दिनेश सावंत	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
9.	श्री विजयराम	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई
10.	श्री मनोज सुरेन्द्र श्रृंगारपुरे	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई
11.	शकुंतला जलगांवकर	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय

12.	श्रीमती नीता रावराणे	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
13.	श्रीमती प्रीति नितिन काजवे	अवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
14.	श्रीमती एकता महाडिक	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय
15.	श्री दीपक कुमार	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	केंद्रीय कार्यालय

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करते हैं। हिंदी ने पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

....नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

हिंदी कार्यशालाः प्रथम सत्र

ज्ञान स्रोतः श्री संजीब घोष,
उप-प्रधानाचार्य एवं उप-प्रमुख, शैक्षणिक इकाई, प.ऊ.शि.सं.

हिंदी कार्यशालाः द्वितीय सत्र

ज्ञान स्रोतः डॉ. श्री सैयद मासूम रज़ा,
सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग

आमंत्रित ज्ञान स्रोत डॉ. श्री सैयद मासूम रज़ा,
सहायक निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग
का परमाणु ऊर्जा शिक्षा संस्था के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत

प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरण

प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरण

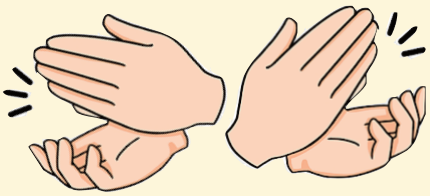

प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र वितरण

हिंदी कार्यशाला

आयोजन दिनांक: 29.02.2020

आयोजन स्थान: परमाणु ऊर्जा कनिष्ठ महाविद्यालय, मुंबई

विषय: प्रथम सत्र: तिमाही रिपोर्ट, संक्षिप्त अनुवाद, टिप्पण-प्रारूपण

श्रीमती अनुराधा दोडके, उपनिदेशक (राजभाषा), निसेसंप्रनि, मुंबई

द्वितीय सत्र: राजभाषा नीति

श्री अचलेश्वर सिंह, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), प.ऊ.वि., मुंबई

उपस्थिति:

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विद्यालय/कार्यालय
1	श्री संजय कुमार	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम
2	श्री पवन कुमार ठाकुर	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.कें.वि., तुरामडीह
3	श्री सुनिल ताथु माली	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प-.वि.कें.ऊ.1, जादूगोड़ा
4	श्रीमती सुनीता सुचारी	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगोड़ा
5	श्री गौरव कुमार	प्राथमिक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगोड़ा
6	श्रीमती कुमारी किरण	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगोड़ा
7	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	प्रयोगशाला सहायक	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगोड़ा
8	श्री खांगर नंदकिशोर महादेव	प्राथमिक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-2, जादूगोड़ा
9	श्री खीमाराम	प्राथमिक अध्यापक	प-.वि.कें.ऊ.2, तारापुर
10	सुश्री प्रिया पिंपलकर	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर
11	श्री रवीन्द्र गेहलोत	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर

12	श्री राजेश कुमार	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि., काकरापार
13	श्रीमती रीतू सिंह किशन सिंह	प्रेप अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि., काकरापार
14	श्री रमेश तिलवे	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, रावतभाटा
15	श्रीमती वाई. वासंती पुरुषोत्तम	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
16	श्री सुरेन्द्र वि. सोनवणे	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
17	श्रीमती साक्षी शरद शिंगटे	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई
18	श्रीमती अदिति डे	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
19	श्री जॉन एंटोनी	वरिष्ठ लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
20	श्रीमती वीना वि. राऊल	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई
21	श्री भानुदास झुंबर रंधवान	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
22	श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
23	सुश्री भावना अधिकारी	प्राथमिक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई
24	श्रीमती सुजाता बी. सावंत	प्रवर श्रेणी लिपिक	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
25	श्रीमती हरिनी शेट्टी	प्रेप अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई
26	श्रीमती संध्या आंब्रे	सहायक	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
27	श्रीमती टी. उमा	प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई
28	श्री महेश एम. वालेन्द्र	प्रयोगशाला सहायक	प.ऊ.क.म.वि., मुंबई

29	श्रीमती शोभना डी. पनीकर	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
30	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	निजी सचिव	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
31	श्रीमती अंबिका सुंदरेशन नायर	सहायक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
32	श्रीमती विशाखा विलास पवार	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
33	श्रीमती नीता सुधीर रावराणे	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
34	श्रीमती रश्मि शरद अमृते	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
35	श्रीमती छाया माधव दिघे	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
36	श्रीमती स्मिता शंकर शिर्के	प्रवर श्रेणी लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
37	श्रीमती विद्या राजेन्द्र बोबले	वरिष्ठ लिपिक	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

.... मदन मोहन मालवीय

हिंदी कार्यशालाः प्रथम सत्र

ज्ञान स्रोतः श्रीमती अनुराधा दोड़के,
उप-निदेशक (राजभाषा), निसेसंप्रनि, मुंबई

हिंदी कार्यशालाः द्वितीय सत्र

ज्ञान स्रोतः श्री अचलेश्वर सिंह,
संयुक्त निदेशक (राजभाषा), परमाणु ऊर्जा विभाग, मुंबई

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

केंद्रीय कार्यालय, पश्चिमी क्षेत्र, प.ऊ.कें.वि.–6, अणुशक्तिनगर, मुंबई–400094

दूरभाष नं.: 022–25565049 / 25503328 / 25571501 / 25503310

वेबसाइट: www.aees.gov.in

ईमेल: chairman@aees.gov.in, secretary@aees.gov.in

cao@aees.gov.in, rajbhasha@aees.gov.in